सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 14 ▪ ▪ अंक : 8 ▪ ▪ 5 नवम्बर 2017 ▪ ▪ मूल्य : 20रु. ▪

पूज्य गच्छाधिपति श्री के द्वारा युवाओं को हितशिक्षा

केयुप संकल्प गीतिका का समूह गायन

केएमपी अधिवेशन का सफल प्रारम्भ

सप्तम पुण्यतिथि पर हार्दिक

श्रद्धांजली

श्रीमती सवितादेवी शांतिलालजी मेहता

मुझे तेरी बहुत याद आती है माँ
तेरी याद तुझसे दूर होने का दर्द दे जाती है माँ...
तेरे पास था तो तेरे आँचल में सो जाता था माँ
अब सोने से पहले तेरे खयालों में खो जाता हूँ माँ...
मेरी हर तकलीफ में मुझसे ज्यादा दर्द पाती थी माँ
वो भी क्या दिन थे जब अपने हाथों से खिलाती थी माँ...
जब पास था तो बाहर जाने को ललचाता था माँ
अब हररोज़ तुझसे मिलने को तरस जाता हूँ माँ...
तेरे वात्सल्य की छाँव को नहीं भूल पाता हूँ माँ
वो छाँव बरकरार है, अब इसी से खुद को समझाता हूँ माँ...
तेरी ममता की मूरत को मन में बसाया हुआ है माँ
हमने मन में तेरा मंदिर बनाया हुआ है प्यारी माँ...

जन्म 03.06.1973

स्वर्गवास 06.12.2010

तुम्हारे लाडले : रोहित और रीतिक

सौ. कमला मेहता, सौ. सीमा मेहता, सौ. सूरीला मेहता, सौ. पायल बोकडिया

प.पू. बहिन म. डॉ. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की आप सांसारिक बहिन थी।

शा. कालुचंदजी अशोककुमार श्रीश्रीश्रीमाल
फर्म
मणि स्टील इण्डस्ट्रीज
मुम्बई
फोन : 022-67437943

शा. शांतिलालजी मेहता
रोहित कुमार रीतिक कुमार मेहता
फर्म : रोहित एल्युमिनियम एजेन्सी
अहमदाबाद
फोन : 079-27553586

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधइ ॥

– दशवैकालिक 6/19

यतना (जागरुकता) पूर्वक चलने वाला, यतनापूर्वक खड़ा होनेवाला, यतनापूर्वक बैठनेवाला, यतनापूर्वक सोनेवाला, यतनापूर्वक भोजन करनेवाला और यतनापूर्वक बोलनेवाला पाप-कर्म का बंधन नहीं करता।

Walk carefully, stand carefully, sit carefully, sleep carefully, eat carefully, and speak carefully so that no sinful act is committed.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	05
3. तेतली पिता	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	06
4. गोत्र का इतिहास	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	08
5. गुरु-दक्षिणा	मुनि समयप्रभभसागरजी	10
6. समाचार दर्शन	संकलन	11
7. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	30

आगामी कार्यक्रम

गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की निश्रा में आगामी कार्यक्रम

तुलसी विहार में जिनमंदिर प्रतिष्ठा
26 नवंबर 2017

चिंतामणि मंदिर बीकानेर में मूर्ति प्राकट्य उत्सव
27 नवंबर से 1 दिसंबर 2017

उदयरामसर में जिनमंदिर प्रतिष्ठा
4 दिसंबर 2017

सिणधरी से नाकोड़ा तीर्थ छरी पालित संघ
23 दिसंबर से 29 दिसबंर 2017

जहाज मंदिर में वाचना शिवीर
6 जनवरी से 8 जनवरी 2018

चितलवाना में विद्यालय उद्घाटन
27 जनवरी 2018

सांचोर में शांतिनाथ जिनमंदिर का रजत महोत्सव
28 जनवरी से 30 जनवरी 2018

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 13 अंक : 08 5 नवम्बर 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

जीवन में जीवन का मूल्य समझना जरूरी है। जीवन की मूल्यवत्ता का अहसास जब तक नहीं होता, तब तक हम उसके साथ न्याय नहीं कर पाते।

सोने के टुकडे को जब तक सोना नहीं समझा जाता, तब तक वह तिजोरी की शोभा नहीं बन पाता। यदि पीतल को सोना समझ लिया जाता है, तो वह सोने की तरह पूजा जाने लगता है।

जीवन की स्थिति भी ऐसी ही है। जीवन को मूल्यवान् कहना उचित नहीं है। क्योंकि जो मूल्यवान् होता है, वह मूल्यहीन होता है। क्योंकि उसके मूल्य की सीमा है।

जिसके मूल्य की कोई सीमा नहीं है, जिसे किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता, वह अनमोल होता है। क्योंकि उसका मूल्य हो ही नहीं सकता, कोई चुका ही नहीं सकता।

मुश्किल यह है कि हम अपने जीवन की कींमत नहीं आंक रहे। जीवन खुशियों का खजाना है। कभी कभार विपरीत परिस्थिति आ सकती है, पर उससे जीवन का मूल्य कमजोर नहीं होता।

ऐसे ही जैसे दो हजार का नोट!

कोई व्यक्ति दो हजार के नोट को पांच सात बार मोड कर आपको दे तो क्या आप उसे अस्वीकार करेंगे!

कोई व्यक्ति दो हजार की नोट को मोड मरोड कर एक दम बॉल के आकार में कर के आपको दे, तो क्या उसे स्वीकार करने से इन्कार करेंगे!

कोई व्यक्ति दो हजार की नोट को धूल धूसरित करके आपको दे तो क्या स्वीकार करने में ननुनच करेंगे!

नहीं! आप उसे हर हाल में स्वीकार कर लेंगे। क्योंकि यह तय है कि नोट भले मुडी हो, धूल से सनी हो, पर इससे उसका मूल्य कम नहीं हो जाता।

ठीक ऐसे ही हमारा अनमोल जीवन है। परिस्थितियों की प्रतिकूलता भले आये, निष्फलता भले मिले, पर इससे जीवन का मूल्य कम नहीं होता।

ऐसा सकारात्मक चिंतन जीवन को ऊँचाईयों की ओर ले जाता है।

गुरुदेव की कहानियाँ

योग्य शिष्य

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

रसायन विद्या का प्रौढ़ विद्वान नागार्जुन शिष्य की खोज में था। कोई योग्य पात्र मिल जाये तो उसे अपनी ज्ञान-सम्पदा सौंप दूं।

दो युवक उसके पास आये। दोनों की परीक्षा लेने के उद्देश्य से नागार्जुन ने उनको कुछ औषधियों के नाम बताकर 12 घण्टे में रसायन तैयार कर देने को कहा।

दोनों औषधियाँ एकत्र करने निकल पड़े। 12 घण्टे पूरे होने पर दोनों युवक रसायनविद् नागार्जुन के समक्ष उपस्थित थे। एक ने रसायन तैयार कर लिया था जबकि दूसरा खाली हाथ था।

एक के हाथ से रसायन ले लिया और दूसरे से प्रश्न किया-तुमने तैयार क्यों नहीं किया?क्या तुम्हें औषधियाँ या आवश्यक उपकरण नहीं मिले?

उसने गम्भीरता से कहा- औषधियों का संग्रह तो कर लिया था, पर लौटते वक्त रास्ते में एक भिखारी मिला जो मरणासन्न अवस्था में था। मैं उसकी अकुलाहट नहीं देख

सका और उसकी सेवा में लग गया। उचित औषधि व समुचित व्यवस्था से वह ठीक हो गया और मैं इधर आ गया। 12 घण्टे का समय पूरा हो चुका था। मैं रसायन तैयार न कर सका, इसका मुझे जरा भी दु:ख नहीं है। हां, भीतर आनन्द जरूर व्याप्त हो रहा है क्योंकि मैं एक मरते आदमी को बचा सका हूँ।

नागार्जुन ने दूसरे ही पल उसे अपना शिष्य घोषित कर दिया।

चातुर्मास की विनंतियाँ

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आगामी चातुर्मास हेतु इन्दौर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से एवं भीलवाडा श्री संघ की ओर से भावभीनी विनंती की गई। इन्दौर संघ की ओर से श्री डुंगरमलजी हुण्डिया ने विनंती की कि वर्षों से हमारी चातुर्मास की विनंती चल रही है। इस वर्ष चातुर्मास इन्दौर ही करना है। चातुर्मास के बाद उज्जैन की प्रतिष्ठा है। तो इस बार इन्दौर संघ को ही यह लाभ मिलना चाहिये। रामबाग दादावाडी का जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से आपके ही मार्गदर्शन में हो रहा है। उसकी प्रतिष्ठा भी आपश्री के करकमलों द्वारा संपन्न कराना है। हमारी विनंती को स्वीकार करना है।

भीलवाडा संघ की ओर से परम गुरुभक्त श्री सुमित दुनीवाल ने विनंती करते हुए कहा– हमारा भीलवाडा संघ आपके चातुर्मास की प्यास लिये श्रीचरणों में उपस्थित हुआ है। भीलवाडा संघ के सभी संघ मिलकर आपश्री का चातुर्मास कराने का पूर्ण भाव रखता है।

पूज्यश्री ने फरमाया– हमारे समुदाय के नियमानुसार होली चातुर्मास के समय समुदाय के समस्त साधु साध्वियों के चातुर्मासों का निर्णय किया जायेगा। उस समय आप सभी की भावनाओं का ध्यान रखते हुए निर्णय किया जायेगा।

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

तेतलीपिता

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

श्रावस्ती की पावन धरा...पुण्यशाली वायुमण्डल...प्रभावशाली प्रकृति जहाँ संभवनाथ प्रभु के चार-चार कल्याणकों ने आत्म-कल्याण का प्रतिबोध दिया! उसी नगरी के गौरव तेतली पिता श्रेष्ठि के रूप में सर्वत्र प्रसिद्ध थे।

सम्पत्ति में नंदिनीपिता के समान तेतलीपिता के फाल्गुनी नामक धर्मपत्नी थी।

तेतलीपिता की बाह्य ऋद्धि जितनी मनमोहक थी, उतनी ही मनभावन थी उनकी आन्तरिक भाव-समृद्धि!

क्षमा-गुण से छलकती जीवन-चर्या!

दान-गुण से महकता मुखमण्डल!

परोपकार गुण से बनी पावनी काया।

सुषुप्त भाग्य-पुण्य को जागृत करने के लिये एक दिन परमेश्वर महावीर पधारे! उनका पदार्पण क्या हुआ, श्रावस्ती की फिजां ही बदल गयी। नगर का कण-कण प्रभु को बधाने के लिये नाच उठा।

राजमार्ग पर लोगों की भीड़ एक ही दिशा में बढ़ती जा रही थी। क्या कोई मेला लगा हैं अथवा उत्सव-महोत्सव का आयोजन-प्रयोजन है।

चलो! जल्दी चलो! त्रिशला नंदन महावीर स्वामी नगर के बाहर पधारे हैं। ये शब्द जैसे ही तेतलीपिता के कर्ण में प्रविष्ट हुए, पूरे शरीर में जैसे विद्युत् का संचार हुआ!

क्या तीर्थंकर महावीर पधारे हैं?

भवोदधि से तारने वाले वे माझी हैं।

भव-जंगल से उबारने वाले सच्चे साथी हैं।

वीरान जीवन उपवन को सजाने वाले बागबां हैं।

जैसे महावीर की चेतना से उसके तार जुड़े। आत्म प्रदेशों में प्रकंपन हुआ-तेतली पिता! कब तक यूं ही अलसाये पड़े रहोगे। जागो! प्रमाद त्यागो! अध्यात्म का सवेरा तुम्हारा इंतजार कर रहा है।

तन तो अभी समवसरण की डगर पर था पर मन तो कब का महावीर में लीन-विलीन हो चुका था!

यह अतिशय है तीर्थंकर परमात्मा का कि प्रथम एवं द्वितीय वलय की पाँच-पाँच हजार सीढ़ियाँ और तीसरे वलय की दस हजार सीढियाँ बिना थकान के चढ़ गया हूँ। ठीक मध्य में स्वर्ण सिंहासन सजा है! विविध रत्नमय-स्वर्णमय छत्रत्रय की शोभा कुछ निराली ही प्रतीत हो रही है। बारह गुणा ऊँचा अशोक वृक्ष जैसे सारे जगत का शोक-संताप हरने को आतुर है।

तेतलीपिता के चक्षु चिहुंदिशि चक्कर लगा रहे थे। समवसरण का अनुशासन। जिनशासन का मर्यादा एवं श्रद्धा से सिंचित आचरण।

सभी अपनी मर्यादा में है। आचार का उल्लंघन धर्मसभा में कैसे हो सकता है!

उत्तर द्वार से वैमानिक देव, नर एवं नारी प्रवेश करके ईशान कोण में करबद्ध उपस्थित हो गये हैं।

पश्चिम द्वार से भवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देव हर्ष विभोर हो आ रहे हैं और सानुशासन विनयावनत हो नैऋत्य कोण में स्थान ग्रहण कर रहे हैं।

दक्षिण द्वार से भवनपति-व्यंतर-ज्योतिष्क देवियाँ प्रवेश कर रही हैं और मंद चाल चलती हुई परम श्रद्धा से वायव्य कोण में अंजलिबद्ध नमस्कार रही हैं।

इतने में उसकी नजर आगे ही आगे पड़ी है तो आँखें जैसे आनंदमग्न हो ठहर सी गयी है-आग्नेय कोण में मुनिमंडल सहित गणधर भगवंत, श्रमणी मंडल एवं देवियाँ धर्मदेशना श्रवणार्थ करबद्ध उपस्थित हैं। उनके मुखमण्डल

पर श्रुत और चारित्र का लालित्य छाया हुआ है।

इतने में अचानक उसकी आँखें आश्चर्य एवं आनंद से चौड़ी हो गयी है-दूसरे वलय में पारस्परिक वैर विरोध को भूलकर पशु-पक्षी शान्त भाव से बैठे हैं। वहाँ सिंह भी है और बकरी भी! चूहा, बिल्ली, सर्प-नेवला परम प्रशान्त मुद्रा में है। वे एक दूसरे को स्नेहपूरित नेत्रों से निहार रहे हैं। वह समझ गया। यह चमत्कार नहीं! प्रभु का दिव्यातिशय है।

इतने में देव-दुन्दुभि का निनाद हुआ है।

देव-देवी सभी हर्षनाद कर रहे हैं।

इतने में सुना है-सोने की छड़ी, रूपे की मशाल, जरियन का जामा, मोतीयन की माला!

आजू से, बाजू से निगाह रखो, तीन लोक के नाथ देवाधिदेव त्रिशलानंदन चरम तीर्थाधिपति प्रभु श्री महावीर स्वामी पधार रहे हैं।

घणी खम्मा...घणी खम्मा....घणी खम्मा से दशों दिशाएँ गूंजायमान हो उठी हैं!

तेतलीपिता जैसे नेत्र पलक झपकाना भूल गये हैं।

वे देख रहे हैं कि व्यंतर देवों ने स्वर्ण कमलों की रचना की हैं और परमात्मा पूर्व दिशा से उन पर चलकर धर्म-सिंहासन पर बिराजमान हो रहे हैं। देव-देवेन्द्र जय-जयकार कर रहे हैं। इतने में उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में देवों ने प्रभु के प्रतिबिंब स्थापित किये हैं जो साक्षात् परमात्मावत् आँखों को आनंदित करने वाले हैं।

अब त्रिदिशि त्याग के त्रिक मैं प्रविष्ट हो गया हूँ। परमात्मा के अतिरिक्त मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा है!

अद्‌भुत सौन्दर्य है इनकी निर्विकार काया में!

अतिशय कारूण्य है इनके निर्लिप्त नेत्रों में!

अद्वितीय माधुर्य है इनकी निर्दोष वाणी में!

दिव्यध्वनि कर्णगोचर हो रही है!

सुंदर-सुगंधित पुष्पों की वर्षा हो रही हैं!

अरिहंत भगवंत के मुखारविंद से धर्मोपदेश का पीयूष बरस रहा है। सभी देव-देवेन्द्र, साधु-साध्वी, नर-नारी, पशु-पक्षी तन्मय हो धर्म-सुधा का पान कर रहे हैं।

ओह! परमात्मा कर्म-वृक्ष को समूल उखाड़ने वाले हैं!

ओह! परमात्मा मोह तिमिर को भेदने वाले हैं!

ओह! परमात्मा कषायाग्नि को प्रशान्त करने वाले हैं!

यह परमात्मा का पूजातिशय है कि सुर-सुरेन्द्र और नर-नरेन्द्र सभी उनकी पावन चरण रज पाने को आतुर हैं।

ज्ञानातिशय है कि कोई द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव, उनसे अज्ञात नहीं है।

वचनातिशय है कि हर भाषा-भाषी जीव इनकी देशना को समझ जाता है।

अपायापगमातिशय है कि उनकी उपस्थिति से रोग, शोक एवं कष्ट पलायन कर जाते हैं।

आत्म-दशा का ज्ञान-भान प्राप्त कर अनेक ने संयम का निवेदन किया। बहुत से श्रावक धर्म में प्रव्रजित हुए।

तेतलीपिता की आत्मा में भी सम्यग्दर्शन की उजली भोर हुई। उसने आत्म निवेदन किया-प्रभो! मेरी श्रमण धर्म में शक्ति नहीं, पर श्रद्धा अवश्य है। जब भी भव पार उतरना होगा, इस दिव्य नैया के द्वारा ही होगा।

भन्ते! मुझे बारह व्रत प्रदान करें। श्रावक-धर्म का अनुपम दान करें।

वह सम्पूर्ण समर्पण एवं आत्म-अर्पण से शासन में दीक्षित हो गया। परिवारजनों ने भी श्रावक धर्म अंगीकार किया।

धर्म, श्रद्धा एवं संयम-पराक्रम अभिवृद्धि के अनुरूप बहुत काल व्यतीत होने पर एकादश प्रतिमा-पर्युपासना की साधना एकमन-एकरस होकर पूर्ण की।

अन्त समय में समाधिमरणपूर्वक सौधर्म देवलोक में देव बना। सुरायु पूर्ण करके वह महाविदेह क्षेत्र में महाश्रमण की महासाधना करके महामोक्षधाम को प्राप्त करेंगे।

गोत्र इतिहास

रतनपुरा कटारिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

इस गोत्र का संबंध रतनपुर नगर से है। रतनपुर नगर वि. सं. 1082 में सोनगरा चौहान रतनसिंह ने बसाया था। इनकी पांचवीं पीढी में हुए धनपाल एक बार जंगल की ओर जा रहे थे। थकने पर तालाब की पाल पर रूके। पेड़ की छांव में सो गये। कुछ ही पलों में निद्राधीन हो गये।

तभी एक खतरनाक विषधर उधर से गुजरा और सोये हुए धनपाल राजा को डस लिया। जहर शरीर में व्याप्त हो गया। राजा मूर्च्छित हो गये। अद्‌भुत संयोग था कि उस समय विहार करते हुए प्रथम दादा गुरुदेव खरतरगच्छाचार्य श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज अपने शिष्यों के साथ उधर पधारे। राजा धनपाल की स्थिति देख कर वे समझ गये कि सर्प ने इन्हें काटा है।

गुरुदेवश्री ने कृपा कर विषापहार मंत्र से अभिमंत्रित जल राजा पर छिड़का। कुछ ही पलों में जहर का असर दूर हो गया। राजा सचेत होकर बैठा। उसने गुरु महाराज को देख कर वंदनाऐं की। निवेदन किया– गुरुदेव! आज आपने ही मेरा जीवन बचाया है। मैं आपका भक्त बन गया हूँ। आपका उपकार जीवन में कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता हूँ। आप कृपा करें और रतनपुर पधारें!

गुरुदेव ने रतनपुर की ओर विहार किया। राजा ने विराट् समारोह के साथ गुरुदेव का नगर प्रवेश करवाया। प्रवचन श्रवण किया। राजा ने सभा के समक्ष गुरुदेव के उपकारों का वर्णन करके निवेदन किया कि मैं आपश्री को प्रचुर मात्रा में स्वर्ण अर्पण करना चाहता हूँ। आप कृपा करके स्वीकार करें।

गुरुदेव ने फरमाया– हम जैन साधु हैं। साधु द्रव्य नहीं रखता। धन रखना साधुजीवन की मर्यादा के खिलाफ है।

पूज्य गुरुदेव के इन निःस्पृह विचारों से राजा

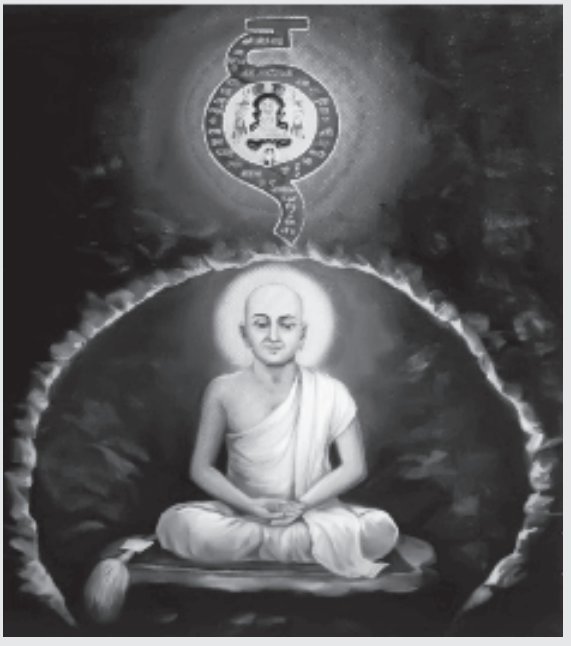

बहुत अधिक प्रभावित हुआ। उसने धर्म के रहस्य को जानने की जिज्ञासा प्रस्तुत की। गुरुदेव ने सिद्धान्तों का रहस्य समझाते हुए आगार धर्म और अणगार धर्म की व्याख्या की।

राजा के आग्रह के कारण गुरुदेव ने चातुर्मास वहीं किया। प्रवचनों से प्रभावित होकर राजा ने सपरिवार वि. सं. 1182 में जैन धर्म स्वीकार कर गुरुदेव का अनुयायी श्रावक बन गया। उस समय गुरुदेव उनके सिर पर वासचूर्ण डाल कर रतनपुरा गोत्र की स्थापना की। इस संबंध में किसी कवि ने दोहा लिखा–

संवत् ग्यारे बयासी में, विषधर नो विष टाल।
जीवाडियो धनपाल ने, सद्‌गुरु एवो भाल।।

इस रतनपुरा गोत्र की 10 शाखाऐं हुईं–

रतनपुरा, कटारिया, बलाही या बलाई, कोटेचा, सापद्रहा, सामरिया, नाराणगोत्र, भलाणिया, रामसीणा, बोहरा।

इन्हीं रतनपुरा गोत्र के धनपालजी के वंश में सोमजी

के पुत्र झांझणसिंह नाम के बडे प्रतापी पुरुष हुए। श्री झांझणसिंह मांडवगढ के बादशाह गौरी के मंत्री थे। उन्होंने शत्रुंजय तीर्थ के छह री पालित विशाल संघ का आयोजन किया था। उस समय आपने 92 लाख की बोली लगाकर परमात्मा की आरती उतारी थी। यह घटना उनकी प्रभु भक्ति का विवरण प्रस्तुत करती है।

बाद में बादशाह के सामने किसी के चुगली खाने पर जब बादशाह रूष्ट हो गया। झांझणसिंह को दरबार में हाजिर कर पूछा गया कि आपने खजाने के कितने रूपये चुराये।

झांझणसिंह ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया- मैंने एक पैसा भी नहीं लिया है। खजाने का एक पैसा भी मेरे लिये हराम है। हॉ! आपकी राशि से मैंने आपका विश्व प्रसिद्ध नाम खुदा तक पहुँचा दिया है। आत्मविश्वास व प्रेम से परिपूर्ण उत्तर सुनकर बादशाह प्रसन्न हो उठा। बादशाह ने झांझणसिंह को सम्मानित करते हुए उनके हाथ में कटार सौंपी। कटार साथ में रखने का सम्मानपूर्ण अधिकार दिया। तब से इनके वंशज कटारिया कहलाने लगे।

यह घटना राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में संरक्षित हस्त लिखित ग्रन्थ 'इतिहास ओसवंश' में तथा नाहर ग्रन्थागार के 'अथ महाजनां री जातां रो छन्द' में प्राप्त होती है।

झांझणसिंह के पुत्र पेथडशा की अपनी ऐतिहासिक प्रसिद्धि है। इसी वंश में बाद में जावसी कटारिया हुए। उस समय किसी कारणवश राजा सभी कटारिया वंश वालों पर क्रुद्ध हो गया। सभी को कैद करके उन पर 22 हजार रूपयों का दण्ड दे दिया। उस समय खरतरगच्छ के भट्टारक जगरूपजी महाराज ने चमत्कार दिखा कर सभी को छुड़ाया। दण्ड भी बादशाह से माफ करवा दिया।

इस कटारिया गोत्र में कई विशिष्ट व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपनी विशिष्ट प्रतिभा और योग्यता के आधार पर समाज व राज्यों में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। स्व. आचार्य श्री जिनकैलाशसागरसूरिजी म. इसी कटारिया गोत्र के थे। वर्तमान में गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. कटारिया गोत्र के हैं, जो खरतरगच्छ परम्परा में संयम की आराधना कर रहे हैं।

बलाही- रतनपुरा कटारिया गोत्र की ही एक शाखा बलाही है। कटारिया खानदान में हुए एक श्रेष्ठि का लेन देन का व्यवहार बलाईयों (एक सामान्य जाति के लोग) के साथ करते थे। इस कारण लोग उन्हें बलाईया बलाईया कहने लगे। कालान्तर में उनके वंशजों की यही अटक हो गई। वे बलाही/बलाई कहलाने लगे।

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि ने जब राजा धनपाल को प्रतिबोध देकर रतनपुरा गोत्र की स्थापना की थी, उस समय बडी संख्या में अन्य क्षत्रियों ने भी जैन धर्म स्वीकार किया था। उस समय गुरुदेव ने अलग अलग 24 गोत्रों की स्थापना की।

1. हाडा 2. देवडा 3. सोनगरा 4. मण्डलीचा 5. कुंदणेचा 6. बेडा 7. बालोत 8. चीपा 9. कोच 10. खींची 11. विहल 12. सेमटा 13. मेलवाल 14. वालीया 15. माल्हण 16. पावेचा 17. कांवलेचा 18. रापडिया 19. दुदणेचा 20 नाहरा 21. ईबरा 22. राकसिया 23. सांचोरा 24. बांघेटा

खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत शाखा का गठन

मरुधरमणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन प्रेरणा एवं निश्रा में कुशल दर्शन परिसर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी, पर्वत पाटिया सूरत में मिगसर वदी 4 दिनांक 8.11.2017 बुधवार को अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत शाखा का गठन किया गया, जिसमें श्रीमती लीलादेवी चम्पालालजी छाजेड को सर्वसंमति से अध्यक्षा चुना गया। अध्यक्षा को अन्य सदस्या बहिनों से विचार विमर्श कर कार्यकारिणी का गठन करने को अधिकृत किया गया।

कहानी

गुरु–दक्षिणा

मणि चरणरज मुनि समयप्रभसागर

वर्तमान में विश्व के मानचित्र पर थार के रेगिस्तान के रूप में प्रसिद्ध यह भूभाग रेत के बड़े–बड़े टीलों और कहीं रेतीले मैदान के रूप में विशाल भूभाग फैला हुआ है। जो भूतकाल में कभी बड़े समुद्र का स्थल रहा था। वर्तमान में भरी दोपहरी में जगह–जगह फैले हुए पानी के रूप में चमकता नजर आता है मगर जब पास में पहुंचते है तो रेत ही रेत नजर आती है।

जिस भूभाग पर प्रायः वर्षा भी बहुत कम होती है और पीने योग्य पानी जहाँ बहुत ही गहराई से खुदाई करने पर प्राप्त होता है। जहाँ पुराने समय में मुख्य साधन के रूप में काम में लिया जाता था ऊँट। सवारी का काम हो या माल को लाने–ले जाने का। रेतीले धोरों के अनुकूल होने के कारण रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।

बहुत दूर–दूर बसे थे गाँव। खेती योग्य जमीन भी खूब थी। उपजाऊ भी थी मगर जल की प्रचूरता के बिना उसका सदुपयोग नहीं हो पाता था। वर्ष भर में एक फसल भाग्य–योग से अच्छी बारिश हो तो मिल पाती अन्यथा अकाल की प्रायः छाया बनी रहती थी। पशुओं के लिए भी चारा–पानी बहुत मुश्किल से मिल पाता था। इसलिए इस क्षेत्र में अधिकांश शिक्षा का अभाव था। सरकारी विद्यालय होते थे वो भी सभी क्षेत्रों में नहीं। साधनों के अभाव के कारण भी शिक्षकों की ग्रामीण क्षेत्रों के प्रति रूचि कम थी।

घटना है एक छोटे से गांव की जो कस्बे से ज्यादा दूर तो नहीं था मगर रेतीला क्षेत्र और सड़कों के अभाव में दूरी अधिक लगती थी। गांव में एक प्राथमिक स्तर का विद्यालय विद्यमान था। गांव के लोग ज्यादातर मजदूरी का कार्य करने वाले थे। बच्चों को पढ़ाने के प्रति विशेष रूचि नहीं होती थी। फिर भी जो बच्चे पढ़ना चाहते उनको रोकते भी न थे।

गांव में एक मुख्य मार्ग से थोड़ा दूर विद्यालय था। जहाँ बच्चे पढ़ते थे एक ही अध्यापक पांचवी कक्षा तक के छात्रों को संभालता था। विद्यालय में ही अध्यापकजी का निवास, भोजन आदि वहीं बनाते और रात्रि विश्राम भी वहीं करते। शनिवार को अपने गांव चले जाते और सोमवार सुबह ही विद्यालय पहुंच जाते। ईंधन की व्यवस्था बच्चे ही आसपास की सूखी लकड़ियाँ लाकर व्यवस्था कर देते तो अध्यापकजी के पानी आदि की व्यवस्था भी पास के कुएं से लाकर सेवा का लाभ ले लेते। उनकी सेवा से अध्यापकजी प्रसन्न हो जाते। विद्यालय के निर्धारित समय के अतिरिक्त भी बच्चे वहीं बैठे रहते। मैदान भी खूब बड़ा था खेलने के लिए और शाम होने पर बच्चे घर चले जाते।

अध्यापक जी बच्चों को खूब प्यार से पढ़ाते तो अनुशासन भी उनका कठोर था। सारा गृहकार्य बच्चों को समय पर पूरा करना जरूरी होता। गृहकार्य समय पर पूरा न करने पर सजा देने में भी पीछे न रहते। सारे ग्रामवासी भी अध्यापक का सम्मान करते थे।

गाँव के धोरों के उस पार की ढाणियों के बच्चे भी इस पाठशाला में पढ़ने आते थे। पाठशाला से पढ़ने के बाद धोरों पर खेलते–कूदते घर जाते। एक दिन शाम को तेज रफ्तार से हवा चलने लगी। जिससे रेत ज्यादा ही उड़ने लगी। आगे देखना भी मुश्किल होता और देखने के प्रयास में आँखें खोलने पर उसमें रेत भर जाए तो बहुत पीड़ा होती है। इसलिए लड़के आँधी रूकने के इंतजार में थोड़ी देर के लिए अपने ही घुटनों के पार सिर रखकर आँखें बंद कर बैठ गए।

आँधी का क्या भरोसा कभी चले तो लम्बे समय तक चल जाए या थोड़ी ही देर में रूक जाए। मगर उस दिन संयोग से आँधी थोड़ी ही देर में रूक गई।

आँधी के कारण रेत का एक जगह से दूसरी जगह इस तरह स्थानान्तरण होता है कहीं समतल भूमि की जगह गड्ढ़ा बन जाता है तो कहीं समतल भूमि नए टीले का रूप धारण कर लेती है। संयोग से उस दिन भी ऐसा ही हुआ। सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। सूर्य की किरणो से कुछ चमकता हुआ सा उन बच्चों को दिखा। बच्चे कौतुहल वश उसे देखने के लिए पास में पहुंचे तो देखकर अचरज से भर गए। नए कपड़े के थैले का एक भाग का सिरा फटने के कारण थैले से कुछ बाहर आई वस्तु चमकती हुई दिखी।

(क्रमशः)

समाचार दर्शन

बीकानेर चातुर्मास

बीकानेर में सूरि मंत्र साधना महामांगलिक के साथ संपन्न

गुरूपूजन करते विनयराजजी योगेन्द्रजी सिंघवी परिवार

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की सूरि मंत्र की द्वितीय पीठिका की साधना अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। पीठिका की आराधना ता. 23 सितम्बर से प्रारंभ हुई। पीठिका की साधना श्री धनराजजी ढड्ढा के निवास पर की गई। ता. 8 को पूज्यश्री पीठिका साधना से बाहर पधारे। पीठिका की पूर्णाहुति पर महामांगलिक का भव्य आयोजन हुआ।

इस महामांगलिक के अवसर पर पूरे भारत से बडी संख्या में श्रद्धालु उमड पडे। उज्जैन, इन्दौर, बिजयनगर, भीलवाडा, ब्यावर, बाडमेर, बालोतरा, सिणधरी, चितलवाना, सांचोर, पूना, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद, भिनाय, फतेहगढ, धनोप, देवलिया, जयपुर, जोधपुर, नागोर, नीमच, निम्बाहेडा, चित्तौड, उदयपुर, फलोदी, दिल्ली, कोलकाता आदि नगरों से बडी संख्या में लोगों का आगमन हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ 9 बजे हुआ जो दोपहर ढाई बजे तक चला। इतना लम्बा कार्यक्रम होने पर भी सभी लोगों की संपूर्ण उपस्थिति पूरे समय तक रही।

इस अवसर पर राजगृही वीरायतन से उपाध्याय श्री यशाजी म. श्री शिलापीजी म. श्री संप्रज्ञाजी म. श्री रोहिणीजी म. का विशेष रूप से पदार्पण हुआ। समारोह की अध्यक्षता राजस्थान राज्य के अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक श्री राजीवजी दासोत ने की। मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध उद्योगपति फोर्स कंपनी के डायरेक्टर डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया थे। वीरायतन का ट्रस्ट मंडल, बीकानेर महापौर श्री नारायणजी चौपडा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री अशोकजी कटारिया नासिक, नीमच नगरपालिका अध्यक्ष श्री पप्पुजी जैन, श्री बाबुलालजी छाजेड आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने सूरिमंत्र की पांचों पीठिकाओं की व्याख्या की। साधना का रहस्य समझाते हुए मौन एवं एकाग्र जाप की महिमा समझाई। उन्होंने कहा– यह साधना आत्म कल्याण के साथ साथ श्री संघ की सर्वांगीण उन्नति के लक्ष्य से की जाती है। उन्होंने कहा– जीवन में समत्व की साधना अनिवार्य है। किसी की एक गलती पर आगबबूला होने की बजाय उसकी पूर्व की अन्य अच्छाईयों को याद करना चाहिये।

उन्होंने वीरायतन के संदर्भ में कहा– वीरायतन पूरे विश्व में शिक्षा व सेवा का जो अनूठा कार्य कर रहा है, उसकी जितनी अनुमोदना की जाय, कम है। पूरे विश्व में वीरायतन के आचार्य श्री चन्दनाजी और उनकी साध्वीजी ने हजारों लोगों को शाकाहारी बनाया है। उन्हें भगवान महावीर से परिचित कराया है। यह उनका बहुत बडा पुरूषार्थ है।

सभा का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा– गुरु सूर्य है, हम सब सूरजमुखी फूल है। उनकी दिशा ही हमारी दिशा है। उनका आदेश ही हमारा जीवन है।

पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने अपने वक्तव्य में पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव अभिव्यक्त करते हुए गुरु–महिमा का वर्णन किया।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ने गुरुदेव के साथ हुए इस प्रथम चातुर्मास को अपने जीवन की अनूठी

विजयकुमारजी पुखराजजी आशीर्वाद लेते हुए

महामांगलिक में उपस्थित श्रद्धालु वर्ग

विरायतन से पधारे उपाध्याय यशाजी साध्वी शिलापीजी आदि

केयुप संदेश पत्रिका का विमोचन

वीरायतन ट्रस्ट के अध्यक्ष
श्री अभयजी फिरोदिया का सम्मान

उपलब्धि व परम सौभाग्य बताया।

उपाध्याय यशाजी ने कहा– जीवन में गुरु अनिवार्य है। गुरु भगवंत मौन होकर भी मुखर होते हैं और उनका बोलना भी मौन है। उन्होंने कहा– आचार्य श्री चन्दनाजी आज यहाँ पधारने वाले थे पर स्वास्थ्य की प्रतिकूलता वश वे नहीं आ पाये, पर भावों से वे यहीं पर हैं।

डॉ. अभयजी फिरोदिया का वक्तव्य

विरायतन महामंत्री श्री तनसुखराज डागा द्वारा उद्‌बोधन

श्री राजीवजी दासोत अति. पुलिस महा. का उद्‌बोधन

साध्वी श्री शिलापीजी ने वीरायतन के उपक्रमों पर प्रकाश डाला। भगवान महावीर की विचरण भूमि बिहार प्रान्त में भगवान महावीर को कोई नहीं जानता। पर अब वीरायतन के उपक्रम से हजारों हजारों लोग पुनः भगवान महावीर के संदेशों से परिचित हुए हैं। उन्होंने विदेशों में वीरायतन द्वारा चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी।

डॉ. अभयजी फिरोदिया ने चिंतन प्रस्तुत करते हुए भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को बहुत ही गहराई से समझने की प्रेरणा दी। जैन, धर्म, श्रमण आदि शब्दों की गहराई से चर्चा की। अपने विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य में उन्होंने कहा– हम सभी को एक होकर भगवान महावीर के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना है और संपूर्ण विश्व तक पहुँचाना है। उन्होंने पूज्यश्री को साधना हेतु बधाई दी।

राजीवजी दासोत ने व्यावहारिक चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा– हमें पारम्परिक मूल्यों की सुरक्षा करते हुए आधुनिकता के साथ उसका कैसे समावेश करना है, यह चिंतन करना बहुत जरूरी है। उन्होंने पूज्यश्री के प्रति अपनी वंदनाएँ समर्पित करते हुए कहा– आपका आदेश मिला और मुझे इस विशिष्ट अवसर का लाभ मिला।

श्री खरतरगच्छ संघ के मंत्री श्री शांतिलालजी सुराणा ने पूज्यश्री की साधना को बीकानेर का सौभाग्य बताया। प्रारंभ में संगीत सम्राट् श्री मगनजी कोचर ने गुरु भक्ति गीतिका प्रस्तुत कर वातावरण को भक्ति के साथ उल्लासमय बना दिया।

पूज्यश्री की महामांगलिक से पूर्व गुरुपूजन किया गया। गुरुपूजन का लाभ बिजयनगर निवासी श्रीमती पारसकंवर उत्तमराजजी सिंघवी, पुत्र विनयराजजी योगेन्द्रजी सिंघवी परिवार ने लिया।

इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बीकानेर द्वारा पधारे अतिथि गणों का बहुमान अभिनंदन किया गया। केयुप संदेश का विमोचन किया गया। पूज्यश्री ने विशिष्ट मंत्रोच्चारण–युक्त महामांगलिक पाठ सुनाया, जिसे श्रवण कर सभी ने परम धन्यता का अनुभव किया। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा ने व्यवस्थाओं का उत्तरदायित्व बहुत ही व्यवस्थित रूप से निभाया। अतिथिगणों की साधर्मिक भक्ति का लाभ गुरुभक्त परिवार ने लिया।

बीकानेर में प्रतिष्ठा संपन्न

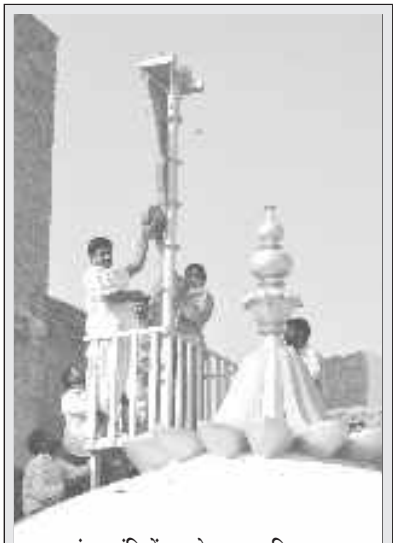
भांडासा मंदिर में ध्वजारोहण डागा परिवार द्वारा

बीकानेर नगर के सुप्रसिद्ध अतिप्राचीन श्री चिंतामणि आदिनाथ जिन मंदिर, श्रेष्ठिवर्य श्री भांडाशाह द्वारा निर्मित श्री सुमतिनाथ मंदिर, श्री वासुपूज्य मंदिर एवं श्री कुंथुनाथ मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनिमंडल एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में ता. 11 अक्टूबर 2017 बुधवार कार्तिक वदि 6 को आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में तपागच्छीय पूज्य पंन्यास श्री पुण्डरीकरत्नविजयजी म. आदि साधु साध्वी मंडल एवं पार्श्वचन्द्रगच्छीय श्री पुण्यचन्द्रविजयजी म. का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस प्रतिष्ठा हेतु त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया।

श्री कुंथुनाथ मंदिर में ध्वजदंड प्रतिष्ठित किया गया। इस प्रतिष्ठा का लाभ बीकानेर हाल कम्पिल निवासी श्री विजयकुमारजी पुखराजजी डागा परिवार ने लिया। श्री वासुपूज्य मंदिर में श्री चंद्रप्रभस्वामी परमात्मा की प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

श्री चिंतामणि आदिनाथ मंदिर में मूल गर्भगृह में श्री संभवनाथ एवं श्री नमिनाथ जिन बिम्ब की पुनः प्रतिष्ठा की गई। इसके साथ ही रंगमंडप में 7 जिन प्रतिमाऐं, एक दादा गुरुदेव की प्रतिमा एवं गुरुदेवों के चार चरण बिराजमान किये गये।

चिंतामणि आदिनाथ परिसर स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर में ध्वजदंड प्रतिष्ठित किया गया। इन प्रतिष्ठाओं के पश्चात् शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जो सुमतिनाथ जिन मंदिर पहुँची। वहाँ प्रथम एवं द्वितीय तल पर आठ जिन बिम्ब पुनः प्रतिष्ठित किये गये। शिखर पर पॉच ध्वजदंड प्रतिष्ठित किये गये। मुख्य ध्वजा का लाभ श्री पुरखचंदजी दीपचंदजी नेमचंदजी शांतिलालजी अभयकुमारजी डागा परिवार ने लिया। विधि विधान हेतु शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण गोवा निवासी पधारे।

ता. 12 को द्वारोद्घाटन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

खरतरगच्छ सुखसागर समुदाय में पहली बार दो मुनि आचरिक बने

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में उनके शिष्य पू. मुनिराज श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनिराज श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आचारांग सूत्र के योगोद्वहन कर आचरिक बने।

नंदी विधान में पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि हमारे समुदाय में सम्मेलन के नियमानुसार योगद्वहन प्रारंभ किये गये। दोनों मुनिवरों ने रायपुर के चातुर्मास में उत्तराध्ययन तथा यहाँ आचारांग सूत्र के 50 दिवसीय योग विधिविधान के साथ पूर्ण किये।

अब इन दोनों मुनियों को यह अधिकार होगा कि अन्य योगवाही के लिये संघाटक बन सकेंगे। सकल श्रीसंघ ने मुनिवरों को बधाई अर्पण की तथा अक्षतों से बधाया।

अष्टधातु से निर्मित 500 से 2025 वर्ष पुरानी 1116 दुर्लभ प्रतिमाएं प्रकट होगी

इन प्रतिमाओं को विक्रम संवत 1639 में लाए थे बीकानेर,

27 नवम्बर से चिंतामणि जैन मंदिर में होगा महोत्सव, पूजन-अभिषेक के होंगे आयोजन

पांच सौ से दो हजार प्रतिमाएं 27 नवम्बर को मंदिर के गर्भगृह से की जायेगी। मंदिर के इन प्रतिमाओं का अभिषेक जाएगा। विक्रम संवत 1639 प्रतिमाओं को सीकर से मंदिर के गर्भगृह में रखवाया धातु निर्मित इन प्राचीन गर्भगृह से निकाला जा रहा

पांच शताब्दी से जैन मंदिर में 27 नवम्बर से महोत्सव का आयोजन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ जिनमणिप्रभसूरिजीमहाराज सानिध्य में आयोजित 1116 प्रतिमाओं का किया जाएगा। मंदिर धारीवाल ने बताया कि पहुंचेंगे।

इस दौरान मंदिर प्रतिदिन पूजा–अर्चना, आयोजन होंगे।

अकबर के कब्जे में थी प्रतिमाएं

चिंतामणि प्रन्यास के अध्यक्ष श्री निर्मलजी धारीवाल ने बताया कि अकबर के सेनापति तुरसमखान ने विक्रम संवत् 1633 में राजस्थान के सिरोही क्षेत्र पर आक्रमण कर वहां के मंदिरों में स्थापित धातु की प्रतिमाओं को उठवा लिया। इनको गलाने के लिए फतेहपुर सीकरी ले जाया गया। इसकी जानकारी मिलने पर बीकानेर के दीवान कर्मचन्द बच्छावत ने प्रतिमाओं को गलाने से बचाने के लिए बादशाह अकबर से चर्चा की। परिणाम स्वरूप बादशाह ने ये प्रतिमाऐं चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि को अर्पण कर दी।

बादशाह ने बीकानेर रियासत के तत्कालीन महाराजा रायसिंह को प्रतिमाओं को सुरक्षित ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी। जिस पर विक्रम संवत् 1639 में जैन समाज के श्रावक राजमहल गए तथा धूमधाम से प्रतिमाओं को लाकर गुरुदेव के आदेश से चिंतामणि जैन मंदिर में भूगर्भ में बिराजमान की।

साल पुरानी 1116 जैन बीकानेर के चिंतामणि जैन मंत्रोच्चारण के साथ प्रकट महोत्सव के आयोजन में और विशेष पूजन किया में धातु से निर्मित इन दुर्लभ बीकानेर रियासत में लाकर गया था। आठ साल बाद प्रतिमाओं को दर्शनार्थ है।

अधिक प्राचीन श्री चिंतामणि एक दिसम्बर तक विशेष किया जा रहा है। जैन के गच्छाधिपति आचार्य श्री आदि ठाणा के पावन महोत्सव के दौरान प्राचीन अभिषेक, विशेष पूजन प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मल उत्सव में देशभर से श्रद्धालु

परिसर में पांच महापूजन, अभिषेक, दर्शन के

इससे पूर्व 2009 में नवम्बर में इन प्रतिमाओं को अभिषेक, पूजन व दर्शनार्थ प्रकट किया गया था। विक्रम संवत् 1022 से 1602 के मध्य की इन 1116 धातु प्रतिमाओं पर तत्कालीन शिलालेख भी अंकित है।

87 साल में 6 बार निकाली

भुजिया बाजार स्थित श्री चिंतामणि जैन मंदिर में बीते 87 साल में इन प्राचीन प्रतिमाओं को केवल सात बार ही अभिषेक और दर्शनार्थ मंदिर के गर्भगृह से बाहर निकाला गया। विक्रम संवत् 1987, 1995, 2000, 2019, 2033, 2066 में प्रतिमाएं भूगर्भ भण्डार से निकाली गई थी।

11वीं से 16वीं शताब्दी तक की प्रतिमाएं

मूर्ति पर उत्कीर्ण लेखों का अध्ययन करने से उस समय के आचार्यों, उनके गच्छों, श्रावकों के नाम एवं उनके गोत्रों आदि की जानकारी प्राप्त होती है। ये प्रतिमांए 11वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य की है। 11 वीं सदी की 9, 12वीं शताब्दी की 10, 13वीं शताब्दी की 63, 14वीं शताब्दी की 259, 15वीं शताब्दी की 436, 16वीं शताब्दी की 339 प्रतिमाएं हैं।

–निर्मल धारीवाल

चालीसगांव में उजमणा उत्सव

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी गणिनी प्रवरा पूजनीया श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. प्रवचन प्रभाविका हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 के पावन सानिध्य में उनकी प्रेरणा से दीपावली के अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ उद्यापन उत्सव का आयोजन किया गया।

इस महोत्सव में बडी संख्या में लोगों ने भाग लिया। अठारह अभिषेक आदि कई महापूजनों का आयोजन किया गया।

चेन्नई में गुरु सप्तमी का आयोजन

चेन्नई में धोबी पेठ श्री संघ में पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 32वीं पुण्यतिथि का आयोजन मिगसर वदि 7 ता. 10 नवम्बर 2017 को मनाया जायेगा। यह महोत्सव पूजनीया गणिनी प्रवरा पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म. वर्धमान तपाराधिका श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मनाया जायेगा। गुणानुवाद सभा के पश्चात् स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया है। जिसका लाभ श्री प्रकाशजी पारख परिवार ने लिया है।

सांचोर में पंचाह्निका महोत्सव सह उजमणा

सांचोर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा का शासन प्रभावक चातुर्मास संपन्न हुआ है। पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. के रजत संयम वर्ष अनुमोदनार्थ एवं उनके व पू. प्रिय ज्ञानांजनाश्रीजी म. पू. प्रियदक्षांजनाश्रीजी म. के सहस्रकूट तप व पू. प्रियवर्षांजनाश्रीजी म. के 15वीं ओली तप की आराधना के निमित्त 42 छोड के उजमणे सहित पंचाह्निका महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

ता.17 अक्टूबर को प्रकाशचंदजी छगनलालजी कानूगो की ओर से श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजा पढाई गई। ता. 18 को कालूचंदजी किशनाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार की ओर से पंच परमेष्ठी पूजा व 19 को दीपावली के दिन श्री लक्ष्मी महापूजन श्री कार्तिककुमारजी अखराजजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार की ओर से पढाया गया। ता. 20 को गुरु गौतम स्वामी महापूजन श्री पारसमलजी वागजी परिवार की ओर से तथा ता. 21 को श्री ऋषिमंडल महापूजन एक साधर्मिक भाई की ओर से पढाया गया।

स्वामिवात्सल्य का लाभ श्रीमती शांतादेवी जीवराजजी उकजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार की ओर से लिया गया।

जहाज मंदिर में वांचना शिविर 6 से 8 जनवरी 2018

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में जहाज मंदिर मांडवला में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् केयुप द्वारा त्रिदिवसीय वांचना शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में धर्म, स्वाध्याय, विधि विधान, जीवन कला आदि के संदर्भ में पूज्य गुरु भगवंतों द्वारा वांचना दी जायेगी।

सकल श्री संघ से अनुरोध है कि इस शिविर में अधिक से अधिक लोग पधार कर लाभ लें।

बीकानेर में केएमपी शाखा का गठन

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में पू. साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् की बीकानेर शाखा का गठन किया गया। सर्व सम्मति से श्रीमती चारुजी नाहटा को अध्यक्ष, श्रीमती सुशीला धारीवाल को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्रीमती रेणु खजांची को मंत्री, श्रीमती सुशीलादेवी गुलगुलिया व मनीषाजी खजांची को कोषाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

बीकानेर में चातुर्मास परिवर्तन
श्रीमती आशादेवी नेमचंदजी खजांची के घर

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्नता की ओर है। चार महिनों में पूज्यश्री के निरन्तर अमृत प्रवचन रहे। प्रवचनों में इतनी भीड पहली बार देखी गई। एक दिन भी प्रवचन बन्द नहीं रहा। रविवार के प्रवचनों का विशेष आयोजन रहा।

पूज्यश्री की निश्रा में पू. साध्वीजी म. की प्रेरणा से मेगा एक्जिबिशन लगा जो पूरे बीकानेर शहर द्वारा सराहा गया। तीन दिवसीय बच्चों का शिविर तो एक कीर्तिमान हो गया। नववर्ष के गौतम रास का आयोजन अपने आप में अनूठा रहा।

चातुर्मास परिवर्तन हेतु परम भक्त सुश्रावक श्री नेमचंदजी खजांची की धर्मपत्नी श्रीमती आशा देवी खजांची ने अपने निवास स्थान पर पदार्पण की विनंती की। जिसे पूज्य गुरुदेव श्री ने स्वीकार किया। पूज्यश्री ने फरमाया– बीकानेर में हमें दो विशिष्ट व्यक्तित्व सदा सदा याद आते हैं। एक हमारे प्रिय भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा और दूसरे श्री नेमचंदजी खजांची। आज से 28 वर्ष पहले बीकानेर में हमारा आना नेमचंदजी के कारण ही हुआ था। उस समय साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से उन्होंने उपधान तप का आयोजन करवाया था। वह उपधान गुरुदेवश्री के बाद पहला उपधान था।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन पूज्यश्री महावीर भवन से एवं साध्वी मंडल सुगनजी म. के उपासरे से विहार कर नेमचंदजी खजांची के घर पधारेंगे। वहीं पर प्रवचन आदि का आयोजन होगा।

आचार्य तुलसी का जन्म दिन
पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में मनाया गया

तेरापंथ संघ के निवेदन को स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा गंगाशहर स्थित तेरापंथ समाधि स्थल पर पधारे, जहॉ उनकी पावन निश्रा में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य श्री तुलसी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के साधु साध्वीजी, केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल, बीकानेर महापौर श्री नारायणजी चौपडा आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया– संत सभी के होते हैं। संत किसी न किसी परम्परा में जीयेगा, पर उनका जीवन, उपदेश, आदर्श सभी के लिये हैं।

आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनुशासन, मर्यादा आदि कई क्षेत्रों में नई उॅचाईयॉ दी। यह उनका पुण्य था कि उन्हें तेरापंथ जैसा अनुशासित धर्मसंघ मिला। और यह तेरापंथ धर्मसंघ का पुण्य था कि उन्हें आचार्य तुलसी जैसे अनुशास्ता मिले। इस अवसर पर पूज्यश्री ने कई संस्मरण सुनाये।

त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में बालक बालिकाओं का संस्कारवर्धक शिविर का त्रिदिवसीय आयोजन ता. 15 से 17 अक्टूबर 2017 को किया गया।

प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक शिविर चला। इस शिविर में 300 से अधिक बालक बालिकाओं ने भाग लिया। सूत्र, विधि, जैन जीवन शैली के साथ विविध कलाओं का बोध प्रदान किया गया।

पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे

जैन विश्व भारती, लाडनूं के कुलपति प्रोफेसर बच्छराजजी दुगड एवं प्रोफेसर आनंद प्रकाशजी त्रिपाठी ने बीकानेर पधार कर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का सानिध्य प्राप्त किया। कुलपति प्रोफेसर बच्छराज दुगड़ ने विश्व विद्यालय में चल रहे विविध पाठ्यक्रमों व गतिविधियों से अवगत करवाया तथा आचार्य श्री को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने जैन विश्व भारती लाडनूं के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, बीकानेर द्वारा उनका अभिनंदन किया गया।

दुर्ग में श्री आदिनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार

दुर्ग नगर में देवाधिदेव आदिनाथ परमात्मा के 59 वर्ष प्राचीन देरासर का उत्थापन सह चल प्रतिष्ठा महोत्सव प.पू. गणनायक सुखसागर जी म.सा. के समुदाय के प.पू. आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के विद्वान शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा एवं मार्गदर्शन में शुभ मुहूर्त्त आसोज सुदी 2 शुक्रवार ता. 22.9.17 को सानंद संपन्न हुआ।

त्रिदिवसीय चल प्रतिष्ठा महोत्सव में 21 सितम्बर को रात्रि में भक्ति भावना सितम्बर को प्रात: 6 बजे कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, नवग्रह पूजन, दशदिक्पाल पूजन, अष्टमंगल पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, भैरव पूजन, 64 योगिनी पूजन के साथ प्रतिष्ठा संबंधित विधान प्रारंभ हुए।

प्रात: 9.15 बजे पूर्व प्रतिष्ठित आदिनाथ भगवान सह समस्त प्रतिमाओं का उत्थापन विधान प्रारंभ हुआ।

उत्थापन के पश्चात् सभी प्रतिमाओं की चल प्रतिष्ठा के चढ़ावे बोले गये। जिसमें संघ के सभी सदस्यों ने उत्साह से भाग लिया। देवाधिदेव श्री आदिनाथ परमात्मा की प्रतिष्ठा का लाभ श्री चंपालालजी आसकरणजी कोठारी परिवार ने लिया। श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा श्री पुखराजजी मोहनलालजी ने, श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा का श्री तखतमलजी प्रेमचंदजी जसवंतजी लोढ़ा परिवार ने लाभ लिया। गौतम स्वामीजी की प्रतिष्ठा प्रवीणजी महावीर जी लोढ़ा परिवार ने कराई। दादागुरूदेव की मूर्ति एवं पगलिये की प्रतिष्ठा का लाभ श्री पन्नालालजी सोनराजजी गोलेछा परिवार ने लिया। शांतिविजयजी म. की प्रतिष्ठा श्री भूरमलजी पताशी देवी बरड़िया परिवार ने करवाई। गोमुख यक्षराजजी की प्रतिष्ठा श्री कंवरलालजी राधा बाई गौतमजी कोठारी परिवार ने करवाई। चक्रेश्वरी देवी की प्रतिष्ठा का लाभ श्री मोहनलालजी उमेश कुमारजी लोढ़ा ने लिया। शासन देवी की प्रतिष्ठा श्री पन्नालालजी नवनीत कुमार जी बुरड़ परिवार द्वारा संपन्न हुई। अधिष्ठायक भोमियाजी महाराज की प्रतिष्ठा श्री मुणोत परिवार रायपुर ने करवाई। संपूर्ण कार्यक्रम श्री संजय भाई विधिकारक बैंगलोर के द्वारा संपन्न करवाया गया। कार्यक्रम का संचालन मनीष दुग्गड़ ने किया। उपरोक्त जानकारी श्री कांतिलाल बोथरा अध्यक्ष के द्वारा प्रदान की गई।

अवंती तीर्थ उज्जैन की प्रतिष्ठा 18 फरवरी 2019 को

अवंती महातीर्थ प्रतिष्ठा मुहूर्त स्वीकारते नाहर परिवार

अतिप्राचीन चमत्कारी सुप्रसिद्ध महान् तीर्थ श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ, उज्जैन की प्रतिष्ठा आगामी चातुर्मास के पश्चात् वि. सं. 2075 माघ सुदि 14 ता. 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

उज्जैन में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का भव्य चातुर्मास चल रहा है। उनकी पावन निश्रा में उज्जैन के समस्त श्री संघों की मीटींग हुई, जिसमें प्रतिष्ठा महोत्सव की विनंती करने के लिये बीकानेर जाने का तय किया गया। साथ ही प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का गठन किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश सरकार के उर्जा मंत्री श्री पारसजी जैन को चेयरमेन व संघवी कुशलजी गुलेच्छा बैंगलोर को संयोजक नियुक्त किया गया।

उज्जैन से प्रतिष्ठा महोत्सव की विनंती करने हेतु लगभग सवा सौ प्रतिनिधियों का संघ बीकानेर पहुँचा। इस प्रतिनिधि मंडल की विशेषता थी कि इसमें उज्जैन के मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि समस्त संप्रदायों के आगेवान श्रावक सम्मिलित हुए।

उज्जैन श्री संघ की ओर से प्रतिष्ठा कराने की विनंती लेकर उज्जैन संघ बाजते गाजते पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में पहुँचा। श्री संघ की ओर से मुहूर्त्त उद्घोषणा के लाभार्थी श्री बाबूलालजी संजयजी, सुनील, पार्थ, निखिल नाहर परिवार ने पूज्यश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती को द्रव्य क्षेत्र काल भाव के आधार स्वीकार करते हुए मुहूर्त्त–पत्र श्री संजयजी नाहर को अर्पण किया। उन्होंने ज्योंहि मुहूर्त्त की उद्घोषणा की, सकल श्री संघ में परम आनंद व हर्ष की लहर उमड पडी।

यह ज्ञातव्य है कि अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ की पूर्व में आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने प्रतिष्ठा की थी। उन्होंने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना के द्वारा शिवलिंग में छिपी अवंती पार्श्वनाथ परमात्मा की प्राचीन चमत्कारी प्रतिमा प्रकट की थी। इस तीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्य आचार्यश्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से चल रहा है। शास्त्र शुद्ध संपन्न हुए इस जीर्णोद्धार की यह विशेषता रही कि मूलनायक परमात्मा का उत्थापन नहीं किया गया। एक दिन भी पूजा अभिषेक बंद नहीं हुए। पिछले 11 वर्षों से चल रहे जीर्णोद्धार का यह कार्य अब पूर्णाहुति पर है। जो भी देखता है, देखता ही रह जाता है, ऐसा भव्य जिन मंदिर निर्मित हुआ है।

बिजयनगर मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 12 मार्च को

बिजयनगर प्रतिष्ठा मुहूर्त्त पत्र ग्रहण करते नाकोड़ा भैरव पूर्णिमा मंडल ट्रस्ट

अजमेर जिले के बिजयनगर नगर में श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव पूर्णिमा मंडल के तत्वावधान में चल रहे श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा आगामी 12 मार्च 2018 को पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में संपन्न होगी।

इस मंदिर का निर्माण पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ है।

बीकानेर में ता. 8 अक्टूबर को महामांगलिक के अवसर पर बिजयनगर से श्री संघ ने पूज्य गुरुदेव श्री से मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त का पत्र अर्पण किया। शुभ मुहूर्त्त को प्राप्त कर सकल श्री संघ में हर्ष व आनंद का वातावरण छा गया।

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 बीकानेर चातुर्मास के पश्चात् विहार कर बिकमपुर पधारेंगे। जहॉ उनकी पावन निश्रा में ता. 15 नवम्बर 2017 को महावीर स्वामी जिन मंदिर एवं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा होगी।

वहॉ से ता. 16 को विहार कर पुनः बीकानेर पधारेंगे। जहॉ ता. 26 नवम्बर को उनकी निश्रा में तुलसी विहार स्थित श्री पार्श्वनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

तत्पश्चात् 27 नवम्बर को श्री चिंतामणि आदिनाथ जिन मंदिर के भूगर्भ में चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरि द्वारा बिराजमान किये गये 1116 चमत्कारी अतिप्राचीन प्रतिमाओं का प्राकट्य महोत्सव होगा, जो ता. 27 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक चलेगा।

वहॉ से विहार कर पूज्यश्री उदयरामसर पधारेंगे, जहॉ दादावाडी में निर्मित हो रहे जिन मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 4 दिसम्बर को करवायेंगे।

वहॉ से विहार कर सेतरावा, आगोलाई, पचपदरा, बालोतरा होते हुए सिणधरी पधारेंगे। वहॉ से नाकोडा, जसोल, सिवाना, मोकलसर होते हुए ता. 5 जनवरी 2018 को जहाज मंदिर मांडवला पधारेंगे। लगभग 10–12 दिनों की स्थिरता के पश्चात् विहार कर चितलवाना पधारेंगे। जहॉ संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा निर्मित विद्यालय का उद्घाटन होगा।

वहॉ से पूज्यश्री सांचोर पधारेंगे। वहॉ श्री शांतिनाथ जिन मंदिर प्रतिष्ठा का रजत जयंती महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न होगा। 25 वर्ष पहले पूज्यश्री की निश्रा में ही इस मंदिर का भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होगा। त्रिदिवसीय यह समारोह 28 से 30 जनवरी 2019 तक चलेगा। ध्वजा समारोह 29 जनवरी को होगा।

वहॉ से पूज्यश्री चौहटन होते हुए बाडमेर की ओर विहार करेंगे, जहॉ पूज्यश्री की निश्रा में ता.11 फरवरी को प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

वहॉ से विहार कर पूज्यश्री बालोतरा पधारेंगे, जहॉ 21 फरवरी को श्री केशरियानाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहॉ से विहार कर पूज्यश्री नोरवा जिनकुशल हेम विहार धाम तीर्थ, पाली होते हुए ब्यावर पधारेंगे। वहॉ श्री चन्द्रप्रभ मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 4 मार्च को करवाकर बिजयनगर की ओर विहार करेंगे, जहॉ 12 मार्च को अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न करवायेंगे। वहॉ से पूज्यश्री गुलाबपुरा, धनोप, देवलिया, सराणा, फतेहगढ, मालपुरा होते हुए जयपुर पधारेंगे, जहॉ 19 अप्रेल को मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। साथ ही 22 अप्रेल को मानसरोवर मंदिर, दादावाडी की प्रतिष्ठा होगी। वहॉ से विहार कर पूज्यश्री अजमेर, बिजयनगर, भीलवाडा होते हुए चित्तौड पधारेंगे, जहॉ 6 मई को नाकोडा पार्श्वनाथ तलेटी मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। वहॉ से विहार कर मंगलवाड चौराहा पधारेंगे, जहॉ 13 मई को श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

संपर्क सूत्र मुकेश प्रजापत– 79871 51421

जयपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 19 अप्रेल को

जयपुर नगर में पूजनीया प्रवर्तिनीवर्या श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से कटला स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर का जीर्णोद्धार श्री सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट द्वारा करवाया जा रहा है। इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु ट्रस्टी श्री फतेचंदजी बरडिया, जयपुर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी लोढा आदि प्रतिनिधि गण पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में बीकानेर पधारे। उन्होंने पूज्यश्री से प्रतिष्ठा करवाने व मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने वैशाख सुदि 4 ता. 19 अप्रेल 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर का निर्माण पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. के सांसारिक परिवार द्वारा हुआ।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् व महिला परिषद् का अधिवेशन संपन्न

शिष्यवृंद के साथ उपस्थित गच्छाधिपति आचार्य भगवंत

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ–सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का द्वितीय अधिवेशन एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् का पहला अधिवेशन अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ ता. 28 व 29 अक्टूबर 2017 को संपन्न हुआ।

वक्तव्य मुनि मणिप्रभसागरजी द्वारा

वक्तव्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी द्वारा

साध्वीजी भगवंत द्वारा वक्तव्य

अधिवेशन का उद्घाटन ता. 28 अक्टूबर को हुआ। अधिवेशन के प्रथम सत्र में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने समझदारी, वफादारी, ईमानदारी और जिम्मेदारी के चार सूत्र बताते हुए कहा– हमें बहुत ही जवाबदारी के साथ काम करना है। युवाओं के संगठित होने से ही गच्छ प्रगति के पथ पर बढेगा। हमें किसी भी दूसरे गच्छ या संप्रदाय की आलोचना नहीं करनी है। सेवा सभी संतों की करनी है। पर हमें अपने गच्छ की विरासत को अक्षुण्ण रखने का करना है। अपने गच्छ पूरा प्रयास की जिम्मेदारी निभानी के इतिहास की सुरक्षा को खंडित करने का है। वर्तमान में इतिहास समय में हमें बहुत ही कार्य प्रारंभ है, ऐसे करना है।

पूज्यश्री द्वारा कुछ विशिष्ट घोषणाऐं

- **आगे होने वाले अधिवेशनों में तिलक, माला, श्रीफल आदि द्वारा बहुमान नहीं होगा। शाब्दिक अभिनंदन के साथ आवश्यकतानुसार स्मृति चिन्ह दिया जा सकेगा।**
- **ता. 6 से 8 जनवरी 2018 को जहाज मंदिर में त्रिदिवसीय वांचना शिविर का आयोजन होगा।**
- **ता. 8 जून को पूरे भारत में केयुप द्वारा एक ही दिन रक्तदान का आयोजन किया जायेगा।**
- **केयुप की हर शाखा में व्यक्तित्व विकास के लिये आयोजन होगा।**
- **खरतरगच्छ दिवस मनाना, ज्ञान वाटिका खोलना, केयुप की शाखाओं का विस्तार करना, वैयावच्च करना, जिन मंदिरों का शुद्धिकरण/स्वच्छता अभियान, ये इस वर्ष के मुख्य कार्यक्रम रहेंगे।**

पूज्यश्री ने कहा– युवाओं को संगठित करने के मुख्य उद्देश्य से ही केयुप का गठन किया गया है। हर क्षेत्र में केयुप की शाखा का गठन करके युवाओं को जोडने का कार्य करना है। साथ ही महिला शाखाओं का भी पूरा विस्तार करना है। गच्छ के युवाओं में, महिलाओं में, बालक बालिकाओं में जो प्रतिभा है, उसे आगे लाने का पूरा प्रयास करना है। हर संघ में हमें ज्ञान वाटिका खोलना है। ज्ञान वाटिका पर विशेष ध्यान देना है। बालक बालिकाऐं हमारे शासन व गच्छ का भविष्य है।

केयुप सदस्यों को गच्छ निष्ठा का संकल्प करवाते हुए आचार्य श्री

केयुप विधान की प्रथम प्रति गच्छाधिपति को समर्पित करते हुये

उन्हें तैयार करने में अपनी पूरी भूमिका निभानी है। साथ ही अगले वर्ष अधिक से अधिक स्वाध्यायी तैयार करना है। ताकि पर्युषण महापर्व की आराधना अधिक से अधिक स्थानों पर हो सके। हमें साधु साध्वियों के वैयावच्च का

विशेष अतिथि तेजराजजी गुलेच्छा द्वारा उत्साह वर्धन

केयुप चेयरमेन संघवी अशोकजी भंसाली द्वारा मार्गदर्शन

राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन बोथरा द्वारा स्वागत भाषण

केयुपअधिवेशन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

खरतरगच्छ संघ बीकानेर का बहुमान केयुप केन्द्रिय द्वारा

केयुप बीकानेर अध्यक्ष राजीव खजांची द्वारा स्वागत

पूरा दायित्व निभाना है। सभी ने मुक्त कंठ से बीकानेर की व्यवस्थाओं की उत्तमता के लिये स्थानीय खरतरगच्छ संघ व केयुप बीकानेर शाखा एवं खरतरगच्छ बालक परिषद् व बालिका परिषद् की सराहना की।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने अपने वक्तव्य में केयुप की व्याख्या करते हुए के से केसरी सिंह, यू से यूजफुल एवं प से परिश्रमी बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा– केसरीसिंह की तरह निर्भय, स्फूर्ति युक्त, आत्मविश्वासी, पराक्रमी, जागृत एवं सजग रहना है। हमारी शास्त्र एवं मंदिर तीर्थ संपदाओं पर नाम परिवर्तन हो रहे हैं। उस संदर्भ में सावधान होना है एवं सुरक्षा करनी है। जरूर योगी बनो, पर न बन सको तो पृथ्वी, जल, वायु की तरह उपयोगी व सहयोगी अवश्य बनो। ज्ञान और क्रिया में परिश्रम की नितान्त जरूरत बताते हुए सभी को नित्य दस मिनट स्वाध्याय का पच्चक्खाण करवाया गया।

पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने कहा– आधुनिक के विज्ञान ने दीखावटी जीवन शैली को सजाया है परंतु आंतरिक सौंदर्य रूप संस्कारयुक्त जीवन को आउट ऑफ डेट कर दिया है। विज्ञान तीव्रता दे सकता है पर शांति नहीं, सुविधा दे सकता है पर कला नहीं दे सकता। शांति और जीवन जीने की कला हमें धर्म से प्राप्त होती है। उन्होंने कहा– विश्व की प्राचीनतम ऐसी भारतीय संस्कृति और सभी धर्मों में श्रेष्ठ ऐसे जैन धर्म की प्राप्ति का गौरव मानकर उसे समझें व क्रियाओं के प्रति जागरुक बन आराधना के प्रति अहोभाव धारण करते हुए धार्मिक बनें।

पू. साध्वी डॉ. प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ने संबोधित करते हुए अनुशासन, वैयावच्च की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा– बीकानेर ही ऐसा शहर है जहाँ केयुप, केएमपी के साथ साथ बालक व बालिका परिषद् का भी गठन हुआ है।

केन्द्रीय परिषद् व महिला परिषद् का विस्तार

केन्द्रीय युवा परिषद् में ब्यावर के मनीष कांकरिया एवं अनिल डाकलिया को सम्मिलित किया गया। साथ ही महिला परिषद् में आरती जैन बैंगलोर को सहमंत्री के रूप में मनोनीत किया गया।

वक्तव्य शांतिलाल सुराणा

बालिका परिषद बीकानेर का बहुमान अशोकजी भंसाली द्वारा

केएमपी अधिवेशन दीप प्रज्वलन

श्रीमती मंजू कोठारी दुर्ग ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

अधिवेशन के मुख्य अतिथि पेढी के अध्यक्ष संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, केयुप चेयरमेन संघवी अशोक भंसाली, केयुप अध्यक्ष रतनलाल बोथरा ने सभा को संबोधित किया। केयुप बीकानेर शाखा के अध्यक्ष राजीव खजांची ने स्वागत भाषण दिया।

सभा का संचालन केयुप सहमंत्री रमेश लूंकड किया। अतिथि गणों के साथ जैन श्वे. खरतरगच्छ श्री संघ बीकानेर, भोजन व आवास के लाभार्थी परिवार श्री भीखमचंदजी श्रीपालजी नाहटा परिवार एवं श्री पूनमचंदजी मोतीलालजी नाहटा परिवार का केयुप द्वारा बहुमान किया गया। राष्ट्रीय केयुप द्वारा केयुप शाखा बीकानेर का भी बहुमान किया गया।

द्वितीय सत्र में विविध शाखाओं की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया। अंकित बोहरा अहमदाबाद, मनीष गुलेच्छा अहमदाबाद, चंपालाल वाघेला मुंबई, प्रकाशजी चौपडा कोट्टूर, संतोष वडेर दुर्ग, ललित डाकलिया बैंगलोर, मांगीलाल मालू बालोतरा, मनीष नाहटा बीकानेर, प्रभात नाहटा बीकानेर, रवीन्द्र नाहटा

केयुप महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

मंच संचालन रमेश लुंकड़ द्वारा

वक्तव्य प्रभात नाहटा द्वारा

गुरूदेव आचार्य श्री को वंदन करते श्री धन्नारामजी

फलोदी, अरविन्द महात्मा भीलवाडा, अनिल छाजेड, अनिल छाजेड भीलवाडा, रीतु भंडारी भीलवाडा, राजेश डागा सूरत, सुरेश बोथरा इचलकरंजी, पदमसिंह चौधरी जयपुर, ललित भंसाली राजनांदगांव, सुमित दुनीवाल भीलवाडा, राहुल सुराणा उज्जैन, कुशल कोचर अक्कलकुआं, प्रवीण लूणिया शहादा, यशवंत रांका ब्यावर आदि ने अपने अपने क्षेत्र की शाखाओं की गतिविधियॉ व सुझाव प्रस्तुत किये।

रात्रिकालीन सत्र में दुर्ग के संतोष बडेर ने प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। भक्ति संगीत का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री सुनील पारख व पिन्टु स्वामी द्वारा भक्ति भाव प्रस्तुत हुए।

द्वितीय दिवस अधिवेशन के प्रारंभ में चेन्नई से पधारे श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी के संस्थापक अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने सभा को संबोधित किया। बाद में अ. भा. खरतरगच्छ महिला परिषद् का अधिवेशन शुरू हुआ। प्रारंभ में ज्ञान वाटिका बीकानेर ने संस्कार वर्धक प्रस्तुति दी। जिसे सभी ने सराहा। सभा को महिला परिषद् की अध्यक्ष सरस्वतीजी लोढा कोलकाता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूरजजी गोलेच्छा बैंगलोर, महामंत्री नर्बदाजी जैन, कोषाध्यक्ष ज्योत्स्ना देवी झाबक, सरोजजी गोलेच्छा राजनांदगांव, आरती जैन बैंगलोर, प्रमिला जैन उज्जैन, अंजू सेठिया दिल्ली, मंजू मेहता अहमदाबाद, कान्ता जैन अहमदाबाद ओढव, राजश्री चौपडा अहमदाबाद, सुशीला गुलगुलिया बीकानेर, चारू जैन गाजियाबाद आदि शाखाओं की प्रतिनिधि सदस्याओं ने अपनी अपनी शाखा में गत वर्ष की गई गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

पूज्यश्री ने 8 जून को एक ही दिन पूरे भारत में केयुप द्वारा रक्तदान का कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा दी। दोपहर के सत्र में समस्त शाखाओं का भावभीना बहुमान किया गया। समापन पर्व पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ चातुर्मास समिति के मंत्री श्री शांतिलालजी सुराणा ने एवं केयुप की ओर से केयुप महामंत्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने आभार व्यक्त किया। इस अधिवेशन में पूरे भारत से युवाओं व महिलाओं का आगमन हुआ। बाडमेर, बालोतरा, अहमदाबाद, मुंबई, सूरत, बडौदा, अक्कलकुआं, खापर, शहादा, दिल्ली, जयपुर, बिजयनगर, भीलवाडा, इचलकरंजी, बैंगलोर, चेन्नई, कोट्टूर, नागोर, फलोदी, ब्यावर, पाली, सांचोर, धोरीमन्ना, गाजियाबाद, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, खैरागढ आदि अनेक स्थानों से युवाओं व महिलाओं का आगमन हुआ।

दादावाडी शब्द पंजीकृत हुआ

दादावाड़ी रजिस्ट्रेशन पत्र समर्पित करते खरतरगच्छ संघ जयपुर के श्रावकगण

इतिहास के अनुसार संपूर्ण जैन श्वेताम्बर संघ में चार आचार्य भगवंतों को ही दादा गुरुदेव का संबोधन प्राप्त है। खरतरगच्छ की महान् परम्परा में हुए लाखों जैन बनाने वाले गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, अकबर प्रतिबोधक जिनचन्द्रसूरि इन चार आचार्य भगवंतों को दादा गुरुदेव का संबोधन मिला। इनके चरण या प्रतिमा जहॉ बिराजमान किये जाते हैं, उसे दादावाडी कही जाती है।

इस प्रकार दादावाडियों के निर्माण की गत 800 वर्षों की परम्परा है। पूरे भारत में हजारों दादावाडियों का निर्माण हुआ है। दादाबाडी शब्द सुनते ही मन में यह भाव उपस्थित होता है कि यहॉ दादा गुरुदेव की प्रतिमा या चरण होने चाहिये।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ जयपुर के तत्कालीन संघ मंत्री अनूपजी पारख ने दादाबाडी शब्द को पंजीकृत कराने का संकल्प लिया। सन् 2014 में उन्होंने जी डी एसोसिएट्स एडवोकेट को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर इसे पंजीकृत करने का निवेदन किया। सरकार की ओर से मांगे जाने पर समय समय पर इससे संबंधित साक्ष्य प्रस्तुत किये गये। लगभग तीन वर्ष तक चली कार्रवाही के पश्चात् 6 सितम्बर 2017 को पंजीकृत हो गया।

इस हेतु खरतरगच्छ श्री संघ जयपुर बधाई का पात्र है। जिन्होंने इसे पंजीकृत कराने हेतु अथक प्रयास करके सफलता प्राप्त की। यह उद्घोषणा तत्कालीन संघ मंत्री श्री अनूपजी पारख ने बीकानेर में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के समक्ष सभा में की। इसकी उद्घोषणा होने पर सकल श्री संघ में परम हर्ष व आनंद का वातावरण छा गया। पंजीकृत प्रमाण पत्र की प्रति श्री विजयकुमारजी संचेती, श्री अनूपजी पारख श्री सुनीलकुमारजी बेंगानी, श्री राजकुमारजी बेंगानी ने पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री को भेंट की।

कुछ ही पलों में ये समाचार पूरे भारत में फैल गये। सर्वत्र हर्ष की लहर छा गई।

इस पंजीकृत विधान के अनुसार उसी स्थान को दादाबाडी या दादावाडी कहा जा सकेगा, जहॉ चारों दादा गुरुदेवों में से किसी की प्रतिमा या चरण बिराजमान हो। यदि इनकी प्रतिमा या चरण बिराजमान नहीं है, तो उसे दादाबाडी या दादावाडी नहीं कहा जा सकेगा। इस संदर्भ में समस्त खरतरगच्छ संघों व केयुप को जागरूक होकर कार्य करना है।

प्रेषक : जहाज मंदिर कार्यालय

सादर श्रद्धांजली

– पूना निवासी परम दानवीर श्री रसिकलालजी धारीवाल का स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास से जैन संघ में शोक की लहर छा गई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने परिवार को भेजे संवेदना पत्र में कहा– श्री रसिकलालजी का अनूठा व्यक्तित्व था। प्रायः हर तीर्थ में उन्होंने पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग किया। उनके स्वर्गवास से जैन संघ को बहुत बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

– बीकानेर निवासी श्री कान्तिलालजी पारख का स्वर्गवास हो गया। वे श्री चिंतामणि आदिनाथ जैन प्रन्यास के कोषाध्यक्ष थे। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।

– पादरू निवासी श्री नेमीचंदजी संखलेचा का स्वर्गवास हो गया। जहाज मंदिर परिवार आपको हार्दिक श्रद्धांजली अर्पण करता है।.

ब्यावर में प्रतिष्ठा 4 मार्च को

स्टेशन रोड पर स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव चैत्र वदि 3 रविवार ता. 4 मार्च 2018 को आयोजित होगा। इस मंदिर का निर्माण शा. धूलचंदजी कालूरामजी कांकरिया ट्रस्ट द्वारा किया गया है। प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु श्री अतुलजी कांकरिया ने ब्यावर संघ के सदस्यों के साथ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 4 मार्च 2017 चैत्र वदि 3 रविवार का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। वर्तमान में इस मंदिर के ट्रस्टी श्री निहालचंदजी शांतिलालजी अतुलजी कांकरिया हैं, जो पूरी तन्मयता से जिन मंदिर की सुव्यवस्था देख रहे हैं।

मंगलवाड चौराहा प्रतिष्ठा 13 मई को

उदयपुर चित्तौड मुख्य मार्ग पर स्थित मंगलवाड चौराहा में नवनिर्मित जिन मंदिर की प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने 13 मई प्रथम ज्येष्ठ वदि 6 रविवार का प्रदान किया।

मंगलवाड संघ की ओर से श्री शांतिलालजी मांडोत ने भावभीनी विनंती की। उन्होंने पूज्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करते हुए मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। इस मंदिर का निर्माण जैन श्वेताम्बर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, गज मंदिर द्वारा करवाया जा रहा है। यह प्रतिष्ठा पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में संपन्न होगी।

बालोतरा में अंजनशलाका महोत्सव 21 फरवरी 18 को

बालोतरा में श्री केसरियानाथ परमात्मा के जिन मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। यह मंदिर बालोतरा के समस्त जैन अजैन समाज का श्रद्धा केन्द्र है। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ केसरियानाथ मंदिर ट्रस्ट की ओर से सकल श्री संघ ने बीकानेर आकर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से अंजनशलाका प्रतिष्ठा की भावभीनी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव श्री ने फाल्गुन सुदि 6 ता. 21 फरवरी 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त की उद्घोषणा होने पर सकल श्री संघ में परम आनंद व उल्लास का वातावरण छा गया। पूज्यश्री की निश्रा में जाजम का मुहूर्त्त 31 दिसम्बर 2017 को संपन्न होगा।

बीकानेर खरतरगच्छ संघ की ओर से अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चौपडा, मंत्री श्री जितेन्द्रजी चौपडा, खरतरगच्छ संघ अध्यक्ष श्री महावीरजी चौपडा आदि का बहुमान किया गया।

खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत शाखा का गठन

मरुधरमणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन प्रेरणा एवं निश्रा में कुशल दर्शन परिसर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी, पर्वत पाटिया सूरत में मिगसर वदी 4 दिनांक 8.11.2017 बुधवार को अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद सूरत शाखा का गठन किया गया, जिसमें श्रीमती लीलादेवी चम्पालालजी छाजेड को सर्वसंमति से अध्यक्षा चुना गया। अध्यक्षा को अन्य सदस्या बहिनों से विचार विमर्श कर कार्यकारिणी का गठन करने को अधिकृत किया गया।

उदयपुर में खरतरगच्छ महिला परिषद का गठन

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा उदयपुर का गठन ता. 3 नवम्बर 2017 को किया गया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी को साध्वीश्री ने प्रवचन के दौरान उस परिषद् की घोषणा करते हुए सभी सदस्याओं को विधिवत् शपथ दिलाई।

महिला परिषद की अध्यक्षा श्रीमति माया सिरोया एवं महामंत्री के रूप में श्रीमति हेमलता नाहर को नियुक्त किया गया।

ता. 2 अक्टूबर को चातुर्मासिक विदायी समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अनेक वक्ताओं ने उद्बोधन एवं गीत के माध्यम से अपने भाव अभिव्यक्त करते हुए साध्वीश्री को भीगी पलकों से विदायी दी।

3 घंटे तक लगातार चले इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे उदयपुर के प्रथम नागरिक श्री चन्द्रसिंहजी कोठारी ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में चातुर्मास परिक्र्तन के लिये आजाद हेमलता नाहर ने अपने निवास स्थल पर पधारने की विनंती प्रस्तुत की, जिसे स्वीकार करते हुए साध्वीश्री ने कार्तिक पूर्णिमा की क्रिया एवं भाव यात्रा उन्हीं के निवास पर कराने की सूचना दी।

भायंदर में पंचदिवसीय आयोजन

श्री खरतरगच्छ संघ भायंदर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की 15वीं वर्षगांठ एवं पूजनीया साध्वी अमितगुणाश्रीजी म. के 33वें संयम वर्ष के उपलक्ष में पांच छोड का उद्यापन सह पंच दिवसीय महोत्सव आयोजित किया गया। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी एवं चंपाकली गच्छगणिनी सूर्यप्रभाश्रीजी म. स्नेहसुरभि पूर्णप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता साध्वी अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 के सानिध्य में कार्तिक पूर्णिमा के दिन चातुर्मास परिवर्तन एवं सकल संघ के साथ पदार्पण श्री सोभागमलजी राजेंद्रजी मनोजजी बैगानी के घर हुआ। जहां श्री शत्रुंजय गिरिराज की भावयात्रा करवाई गई। बैगानी परिवार साध्वीवर्या को दीक्षादिवस की हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित की। सकल श्रीसंघ ने अक्षतों से बधाकर साध्वीजी के आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना की।

पंचदिवसीय आयोजन में अठारह अभिषेक, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी के जन्मदिवस के उपलक्ष में दादा गुरुदेव की बडी पूजा, स्नात्र महोत्सव एवं सतरह भेदी पूजा आदि अनेक आयोजन किये गये।

अनेक आयोजनों से परिपूर्ण एवं आराधनामय चातुर्मास की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की एवं पुनः पुनः पधारने के निवेदन के साथ पूज्या साध्वी मंडल को भावभरी विदाई दी।

चैन्नई सूलै में 33 दिवसीय इकतीसा पाठ सम्पन्न

परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम पूज्या पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8 की पावन निश्रा में भाद्रवा सुदि 14 दिनांक 5.9.2017 मंगलवार को 33 दिवसीय दादागुरुदेव इकतीसा पाठ का भव्य अनुष्ठान प्रारंभ हुआ। छोटे-छोटे बालक बालिका, बड़े बूढे सभी ने सामूहिक रूप से पाठ में झूमकर एक नये इतिहास का सर्जन किया। 3-4 वर्ष के बच्चों को सम्पूर्ण इकतीसा कंठस्थ हो गया। नन्हें-नन्हें बच्चे माईक में मधुर ध्वनि में इकतीसा बोलते। प्रतिदिन 3 लक्की ड्रॉ निकाले जाते और सबको प्रभावना दी जाती। प्रतिदिन अलग-अलग मंडलों को आमंत्रित किया गया। श्री आदिनाथ जैन मंडल, श्री कुशल सज्जन महिला परिषद्, श्री चन्द्रप्रभु महिला मंडल, श्री विचक्षण महिला मंडल, श्री खरतरगच्छ युवा परिषद, श्री शांतिनाथ जैन मंडल, श्री संभव नवयुवक मंडल, श्री संभव महिला मंडल, श्री वर्धमान जैन मंडल, श्री कुशल सज्जन स्नात्र मंडल, श्री चन्द्रप्रभु भक्ति मंडल, श्री चन्द्रप्रभु सामायिक मंडल, श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल, श्री पार्श्व महिला मंडल और श्रेणिकजी नाहर आदि सभी ने विभिन्न रागों में इकतीसा जाप करके श्री दादा गुरुदेव के चरणों में विनम्र विनती की।

कार्तिक वदि 3 ता. 8.10.2017 को परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के सूरि-मंत्र की द्वितीय पीठिका पूर्णाहूति एवं 33 दिवसीय इकतीसा पाठ समाप्ति पर दादागुरुदेव की बडी पूजा रखी गई। जिसका लाभ विजयजी सुराणा ने लिया। कार्यक्रम के पश्चात् साधर्मिक वात्सल्य तेजमलजी, अनोपचंदजी, कन्हैयालालजी आदि समस्त बरडिया परिवार की ओर से हुआ। 33 दिन में से जिसकी 27 दिन उपस्थिति रही उनके टोकन से 5 पुण्यशालियों को पारितोषिक प्रदान किये गये। जिसमें प्रथम सोने की चैन, द्वितीय सोने की अंगुठी, तृतीय चांदी की पूजन सामग्री, चतुर्थ चांदी की अष्टमंगल पट्टी, पंचम चांदी की अष्टमंगल पट्टी थी। पारितोषिक का लाभ सौ. रीटाजी अनिलजी लूणिया ने लिया। पूजा पढाने के लिए गुरु भक्त लवेशजी बुरड इन्दौर से पधारे। पूजा आदि का कार्यक्रम प्रातः 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक चला। पूजा में परम पूज्या प्रवर्तिनी निपुणाश्रीजी म.सा. की शिष्या प्रवचन प्रभाविका मंजुलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा एवं धोबी पेठ से पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की भी सान्निध्यता प्राप्त हुई। पू. मंजुलाश्रीजी म.सा. ने मंगल उद्बोधन दिया।

पू. गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा. ने अपने प्रासंगिक प्रवचन में फरमाया- आज हमारे गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सूरि-मंत्र की द्वितीय पीठिका की पूर्णाहूति हुई। उस मंगल, विशुद्ध आराधना-साधना की ऊर्जा हमें भी प्राप्त हो ऐसी मंगल कामना। यह भी विशिष्ट संयोग रहा कि सूरि-मंत्र की पीठिका व इकतीसा पाठ का समापन भी इसी दिन है। सोने में सुहागा रूप दोनों प्रसंग का यह ऐतिहासिक कार्यक्रम हुआ इसकी मुझे प्रसन्नता है। सभी कार्यकर्ताओं को साधुवाद दिया।

प्रथम दिन इकतीसा जाप हेतु चारों दादा गुरुदेव की नयनरम्य प्रतिमा विराजमान की गई। जिसका लाभ साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म.सा. के सांसारिक भुवाव बहिनों ने लिया। प्रकाशचन्दजी, किशोरचंदजी, महावीरजी झाबक, जयचंदजी वैद रायपुर वालों ने बहुत ही सुन्दर डकोरेशन किया। समापन समारोह में 33 दिन तक अभिमंत्रित, ऊर्जा सम्पन्न हुई दादा गुरुदेव की प्रतिमा अपने घर ले जाने का लाभ भी इसी परिवार ने लिया। समापन समारोह में मनोजजी गुलेच्छा ने सुन्दर संचालन किया।

विशेष- इसी 33 दिवसीय इकतीसा पाठ के बीच ता. 17.9.2017 से 26.9.2017 तक नव दिवसीय महोत्सव चातुर्मास में सम्पन्न हुई विविध तपश्चर्या के अनुमोदनार्थ व प.पू. प्रवर्तिनी महोदया प्रेमश्रीजी म.सा. की 64वीं पुण्यतिथि निमित्त रखा गया। जिसमें अठारह अभिषेक, भक्तामर महापूजन, दादागुरुदेव महापूजन सह अन्य पूजाएं रखी गई। ता. 18.9.2017 को पुण्यतिथि के दिन गुणानुवाद सभा, गरीबों को भोजन, अनुकंपादान का आयोजन रखा गया।

ता. 22.10.2017 को सरस्वती महापूजन का आयोजन भी भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। ता. 26.10.2017 को श्री जयतिहुअण महापूजन का आयोजन सूलै संघ की महिलाओं की ओर से हुआ।

श्री खरतरगच्छ जैन संघ वड़ोदरा में श्री शंत्रुजय महातीर्थ की भावयात्रा सह चातुर्मास परिवर्तन संपन्न

कार्तिकी पूर्णिमा के शुभ अवसर पर वड़ोदरा श्री संघ में गच्छाधिपति आ. भगवंत प.पू. श्री मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी गच्छगणिनी प.पू. सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. एवं स्नेह सुरभि प.पू. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. की अत्रे विराजीत सुशिष्या परम उपकारी प.पू. मधुरिमाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने भगवान श्री महावीर स्वामी रचित जिनशासन की अद्‌भुत श्रमण परंपरा अनुसार कार्यक्रम के संपूर्ण लाभार्थी श्रीमान् फोजमलजी झाबक के आजवा रोड़ स्थित निवास स्थान नवपद सोसायटी में बड़ी संख्या में उपस्थित श्रावक श्राविकाओं समेत जिनालयों एवं दादावाड़ी में देव-गुरुओं का दर्शन-वंदन करते हुये बाजते-गाजते चातुर्मास परिवर्तन किया।

शाश्वत श्री शंत्रुजय महातीर्थ के सुशोभित चित्रपट समक्ष पूज्याश्री ने भावभरी वंदना समेत श्री सिद्धाचल तीर्थ की महिमा का अलौकिक वर्णन करके सभी उपस्थित भग्यशालीओं को महातीर्थ की विधिपूर्वक भावयात्रा संपन्न करवाई।

कार्यक्रम पश्चात झाबक परिवार द्वारा नवकारशी का आयोजन किया गया।

– अमितकुमार सालेचा, वड़ोदरा

मुंबई में चातुर्मास परिवर्तन का आयोजन

मुंबई। चातुर्मास के समापन होने पर पू. साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. के चातुर्मास परिवर्तन का आयोजन सांचोर निवासी श्री प्रकाश सी. कानुगो के निवास स्थान 401, ताडदेव टॉवर में हुआ। श्रीसंघ के साथ साध्वी मंडल का प्रवेश संघ के सैकड़ों श्रावकों के साथ हुआ। जहां कानुगो परिवार द्वारा आगवानी की गई। इस अवसर पर दादा गुरुदेव के पूजन का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने 'जीवन की समस्याओं का समाधान' विषय पर प्रवचन दिया। कार्यक्रम पश्चात् स्वरुचि भोजन की व्यवस्था रखी गई। शाम को प्रख्यात गायिका श्रीमती गीताबेन साकरीया द्वारा भक्ति का आयोजन किया गया, जिसमें श्रोतागण मंत्र मुग्ध होकर झुम उठे।

दूसरे दिन साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में 'अधिकार और कर्तव्य' विषय पर अपने विचार प्रकट किये। सभी महानुभावों ने प्रवचन का श्रवण कर गुरुवर्या से आशीर्वाद लिया। सभी मेहमानों का आभार प्रकट करते हुए हेमंत कानुगो ने कहा कि आज का दिन हमारे लिए अविस्मरणीय रहेगा। कार्यक्रम में घेवरचंद संघवी, भंवरलाल छाजेड़, बाबूलाल बोहरा, कैलास सी. जैन, डी.बी. देसाई, पी.के. जैन, शर्मिला ओसवाल, प्रकाश हेगडे, शांतिलाल कवाड़, अनिल भंडारी, मोतीलाल ओसवाल, राकेश मेहता, विक्की ओसवाल, राजेश वर्धन, शांतिलाल सेठ, एच.एस. रांका, एच. एम. संघवी, सुनील पटोदिया, डॉ. जीवराज शाह, इंदरमल जैन, नक्षत्र मेहता, सिद्धराज लोढ़ा, संजय लोढ़ा, पारस गोलच्छा, के.सी. जैन, किशोर खाबिया, वैभव लोढ़ा, अजय सम्रानी, घनश्याम मोदी, महेन्द्र जैन, विनेश भाई सहित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारीयों एवं समाज के कई अग्रणी उपस्थित थे।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागर जी म. आदि ठाणा 3 चौहटन में बिराजमान है। वहॉ से विहार कर बाडमेर पधारेंगे, जहॉ उनकी पावन निश्रा में श्री सीमंधर स्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी का ता. 27.11.17 को खात मुहूर्त्त एवं ता. 29.11.17 को शिलान्यास समारोह होगा।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 दिल्ली चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे, जहॉ अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति की ओर से आयोजित नवाणुं यात्रा में अपनी निश्रा प्रदान करेंगे।

पूजनीया **प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा फलोदी में ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विहार कर विक्रमपुर पधार कर प्रतिष्ठा महोत्सव में सानिध्य प्रदान करेंगे।

पूजनीया मनोहर मंडल प्रमुखा **श्री मनोरंजनाश्रीजी म.** पू. सुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा 7 बकेला का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर ता. 5 नवम्बर को कवर्धा, सहसपुर लोहारा की ओर विहार करेंगे। सहसपुर लोहारा में आपकी निश्रा में जिन मंदिर का वार्षिक ध्वजारोहण समारोह होगा।

पूजनीया **गणिनी प्रवरा श्री सुलोचना श्रीजी म.** सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा कुछ दिनों की चेन्नई में स्थिरता के पश्चात् पार्श्वमणि तीर्थ पेद्दतुम्बलम की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्री जी म.** आदि ठाणा का चालीसगांव में चातुर्मास संपन्न हुआ है। वे 15 नवम्बर को विहार कर मलकापुर, जलगांव आदि क्षेत्रों में विचरण करेंगे।

पूजनीया माताजी म. **श्री रतनमाला श्रीजी म.** पू. बहिन म. **डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन नगर के यशस्वी चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् कार्तिक पूर्णिमा को विहार कर बिजयनगर पधारेंगे, जहॉ उनकी पावन निश्रा में ता. 26 नवम्बर 2017 को श्री नाकोडा भैरव पूर्णिमा मंडल के तत्वावधान में निर्मित हो रहे जिनमंदिर की प्रतिष्ठा अंजनशलाका की जाजम का मुहूर्त्त होगा। जिसमें नौकारसियों आदि के चढावे बोले जायेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.** आदि ठाणा मुंबई बिराज रहे हैं। वहॉ से जयपुर की ओर उनका विहार होगा।

पूजनीया साध्वी **श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा धूले से विहार कर चालीसगांव पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा समदडी नगर में चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् जोधपुर की ओर करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म.** आदि ठाणा गाजियाबाद चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा नागोर से विहार कर बीकानेर पधारेंगे, जहॉ 1116 प्राचीन जिनबिम्बों का प्राकट्य महोत्सव ता. 27 नवम्बर से 1 दिसम्बर पंचदिवसीय कार्यक्रम होंगे।

पूजनीया साध्वी **डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 सूरत के ऐतिहासिक चातुर्मास के पश्चात् पालीताना की ओर विहार करेंगे। वहॉ से राजस्थान पधारेंगे।

पू. साध्वी **श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.** आदि ठाणा का कानपुर नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न हुआ। चातुर्मास के पश्चात् नेपाल की ओर विहार होगा। कानपुर नगर में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि की 32वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया है। तत्पश्चात् विहार होगा।

पू. साध्वी **श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 पाली चातुर्मास संपन्न कर जोधपुर की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री प्रियरंजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 तिरूपति के ऐतिहासिक चातुर्मास के पश्चात् नायडूपेट, नेल्लूर, सुलूरपेट होते हुए चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.** ठाणा 3 उदयपुर के अपने ऐतिहासिक चातुर्मास की सानन्द पूर्णता के साथ बिजयनगर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म.** आदि ठाणा 3 बीकानेर चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विक्रमपुर होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे। जहॉ उनकी प्रेरणा से नवाणुं यात्रा का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

पू. साध्वी **श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 सांचोर चातुर्मास कर पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 3 बीकानेर बिराजेंगे। प्रतिमा प्राकट्य महोत्सव के उपरान्त पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पू. साध्वी **श्री श्वेतांजनाश्रीजी म.** ठाणा अध्ययन के लक्ष्य से मोकलसर से सूरत की ओर विहार करेंगे।

तिरुपातुर की धर्म धरा पर भव्य जलमंदिर पावापुरी की रचना

तिरुपातुर (तमिलनाडु), जिनदत्त कुशल आराधना भवन में दीपावली के पावन प्रसंग पर पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी एवं प.पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं प.पू. प्रियंवदाश्रीजी म. सा., प.पू. शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. योगांजनाश्रीजी, प्रमुदिताश्रीजी, संवेगप्रियाश्रीजी एवं मननप्रियाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से भव्य जलमंदिर पावपुरी की अनोखी एवं अद्‌भुत रचना की गई। जिसे देखने के लिए लोगों का तांता लगा। साध्वीश्री ने कहा- दीपावली पर्व मनोरंजन का त्यौहार नहीं बल्कि आत्मरंजन का त्यौहार है। परमात्मा महावीर ने निर्वाण के पहले 16 प्रहर तक देशना देकर भव्य जीवों पर महान् उपकार किया था। वही देशना आज वर्तमान में उत्तराध्यन सूत्र के रूप में हमें प्राप्त हुई है। इस सूत्र का अध्ययन हमें मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करता है। पावापुरी जलमंदिर का उद्‌घाटन बहुत ही भव्य प्रकार से हुआ। संघ के वरिष्ट व्यक्तियों ने शिखर पर ॐ पुण्याहं ॐ पुण्याहं की ध्वनि के साथ ध्वजा चढाकर लाभ लिया।

पूज्या शुद्धांजनाश्रीजी म. ने ज्ञानवाटिका के वार्षिक उत्सव सभा में कहा कि शिक्षा के साथ संस्कार भी अति आवश्यक है। वे जीवन को ज्योति के साथ जीवन-शैली का भी निर्माण करते है। संस्कार विहीन शिक्षा इंसान को साक्षर के बदले राक्षस बना देती है।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर बालक-बालिकाओं के द्वारा 'जैसी करणी वैसी भरणी' एवं 'नरक की दर्दनाक वेदना' नाटिका का मंचन किया। जिससे उपस्थित लोगों ने निहारते हुए अनेक प्रकार के नियमों को ग्रहण किया।

'जिनशासन महान', 'अमे जैनकुल मां जन्म्या' आदि विविध प्रकार के नृत्यों को देखकर सभी मंत्रमुग्ध हुए।

पंच प्रतिक्रमण, जीवविचार आदि कंठस्थ करने वालों का विशिष्ट बहुमान किया गया। ज्ञानवाटिका में अध्यापन कार्य करवाने वाले लक्ष्मण कवाड एवं सानी कवाड का बहुमान कर प्रशंसा की गई। साथ ही अनुकंपा दान, जीवदयादि के कार्य किये गये। संचालक ललितजी कवाड ने किया।

प्रेषिका- सुषमा कवाड़

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

छह साल का जटाशंकर रास्ते में खडा रो रहा था। उसे देखकर उधर से निकल रहे घटाशंकर को दया आ गई। उसने पूछा– तूं क्यों रो रहा है!

जटाशंकर ने रोते हुए जवाब दिया– मां मुझे मारेगी...!

–अरे क्यों मारेगी!

–मां ने मुझे एक रूपया थोडी शक्कर लाने के लिये दिया था। मेरे हाथ से वह रूपया नाली में गिर गया है। अब मैं क्या करूँ! वह फिर जोर जोर से रोने लगा।

घटाशंकर ने पल भर विचार किया और एक रूपया अपनी जेब से निकाल कर उसे दे दिया। और कहा– जा बेटा! अब रो मत। इस रूपये से शक्कर ले आ और घर जा।

जटाशंकर ने रूपया ले लिया। पर चुप होने के बजाय और जोर जोर से रोने लगा।

घटाशंकर ने दो कदम आगे बढ़ाये ही थे कि बच्चे के रोने की आवाज सुन कर वापस आया और पूछा– अब क्यों रो रहा है!

जटाशंकर ने कहा– जब मैं मां को ये सारी बातें बताऊँगा तो मां मुझे मारेगी कि तूंने ऐसा क्यों कहा कि नाली में एक रूपया ही गिर गया है। तुझे कहना था कि दस रूपये गिर गये हैं। तो तुझे दस रूपये मिलते।

सुनकर घटाशंकर ने वहाँ से रवाना होने में ही भलाई समझी।

यह घटना लोभ की है। खोने में भी दर्द है तो पाने में भी दर्द है। पाने में इस बात का दर्द है कि और ज्यादा क्यों नहीं मिला। व्यक्ति दर्द में ही अपनी खुशियों भरी जिन्दगी गंवा देता है।

चातुर्मासों की घोषणा 12 मार्च 2018 को

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने घोषित किया है कि आगामी वि.सं. 2075 सन् 2018 के श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के साधु साध्वियों के चातुर्मासों की घोषणा 12 मार्च 2018 चैत्र वदि 10 सोमवार को बिजयनगर में प्रतिष्ठा के अवसर पर की जायेगी।

अपने अपने क्षेत्र में चातुर्मास कराने के भाव रखने वाले समस्त संघों के प्रतिनिधि बिजयनगर पधारें। व्यवस्था हेतु बिजयनगर में इस नंबर पर संपर्क करें–

योगेन्द्रसिंह सिंघवी 9833433801

जीतेन्द्र मुणोत 94142 78980

भांडासा मंदिर में प्रतिष्ठा विधान

कुंथुनाथ मंदिर में ध्वजा चढ़ाते
विजयचंद पुखराज डागा परिवार

भांडासा मंदिर में ध्वजारोहण डागा परिवार द्वारा

केयुप बीकानेर के उल्लासित सदस्य गुरुचरणों में

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

वीरायतन के सम्माननीय सदस्य पूज्य गुरुदेव श्री के साथ

दादावाड़ी रजिस्ट्रेशन पत्र समर्पित करते
खरतरगच्छ संघ जयपुर के श्रावकगण

अवंति तीर्थ प्रतिष्ठा मुहूर्त उद्घोषणा
नाहर परिवार द्वारा

महामांगलिक श्रवण करता अपार जनसमूह

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, तिलक रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408